मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ जनवरी २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ०१

२१वां साधारण अधिवेशन

(२०-२१ दिसम्बर २००८) दिल्ली

हवेलियों से दूर हो सकती गरीबी : पूर्व उपराष्ट्रपति शेखावत

मारवाड़ी समाज का महत्वपूर्ण योगदान : पूर्व मंत्री मिर्धा

मारवाड़ी समाज का कोई विकल्प नहीं : पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा

समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर : अध्यक्ष नन्दलाल रुँगटा

बांये से सम्मेलन कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, महामंत्री श्री राम अवतार पोद्दार, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राम निवास मिर्धा, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, दिल्ली प्रान्तीय अध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद एवं श्री आर.के.पुरोहित।

श्री रुँगटा जी को अपना पदभार सौंपते हुए श्री सीताराम शर्मा

दोहरी सदस्यता पर ऐतिहासिक निर्णय

राष्ट्रीय एकता, संगठन एवं समाज सुधार पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित

S R RUNGTA R GROUP

Insync with Nature...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exporters
(A Pioneer House for Minerals)

* IRON ORE - BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES
* MANGANESE ORE - BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES
* LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE

:: CORPORATE OFFICE ::
RUNGTA HOUSE, CHAIBASA-833201, JHARKHAND
Phone : 06582-256561/256761/25661 Fax : 91-6582-256442
Email : rungtas@satyam.net.in, Web Site : www.rungtamines.com; GRAM : "RUNGTA"

:: CENTRAL MINES OFFICE ::
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST.-KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone : 06767-275221/277481/441; Fax : 91-6767-276161; GRAM : 'RUNGTA"

:: REGISTERED OFFICE ::
8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA-700017, INDIA
Phone : 033-2281 6580/3751; Fax : 91-33-2281 5380; Email : rungta_cal@sify.com

समाज विकास

जनवरी २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०१ ✦ एक प्रति-१० रु ✦ वार्षिक-१०० रु

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है.	४
संपादकीय	५
सभी राजस्थानी मारवाड़ी नहीं – सीताराम शर्मा	६
अध्यक्षीय – नन्दलाल रूँगटा	७–८
२१वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन, दिल्ली	९–२०
हवेलियों से दूर हो सकती है गरीबी – श्री भैरों सिंह शेखावत	९
मारवाड़ी सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं – पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा	१०
समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर – अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा	११
सम्मेलन पदाधिकारीगण	१२
दिल्ली अधिवेशन द्वारा पारित प्रस्ताव	१५
प्रस्तावों पर हुई बहस का एक हिस्सा	१७
संविधान संशोधन	२०
मारवाड़ी युवा मंच "कारवां २००८" राँची :-	२१–२३
मारवाड़ियों का विकास लड़कियों के बिना संभव नहीं – संतोष बागड़ोदिया	२१
श्री नन्दकिशोर जालान को समाज गौरव सम्मान	२२
कारवां कविता	२३
पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन	
डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका नये अध्यक्ष चुने गये	२४
कविता :-	
घर से बड़ा न कोई मन्दिर – अक्षय जैन	२५
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना– डॉ. अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'	२५
धरोहर-१ - श्री माहेश्वरी विद्यालय, कोलकाता	२६
धरोहर-२ - मारवाड़ी अस्पताल 'वाराणसी'	२७–२८
धरोहर-३ – गुवाहाटी गोशाला असम की ऐतिहासिक धरोहर	२९
धरोहर-४ – बालिका विद्या मन्दिर, झरिया	३०
धरोहर-५ – महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज, झरिया	३१
देश के निर्माण में मारवाड़ी समाज की भूमिका – लोकनाथ डोकानिया	३२
प्रदर्शन : मानव मन की दुर्बलता –ईश्वर चन्द जैन, टिटिलागढ़	३३
श्रद्धांजलि काव्यांजलि :-	
सबदां रौ सेठी भामाशाह : स्व. कन्हैयालाल सेठीया– डॉ.अर्जुन सिंह शेखावत	३४

सूचना

अगले माह से समाज विकास नयी सदस्यता सुची के अनुसार प्रेषित किया जायेगा।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि.

४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७०००० ९ में मुद्रित

चिट्ठी आई है

आदर्श उदाहरण

+छोटा सा प्रयास कर कुछ लिखने की हिम्मत जुटा पाया हूँ। अगर मेरी भावना आपको एवं समाज विकास के पाठकों को पसन्द आई तो भविष्य में आचार संहिता के अन्य पक्षों तथा मृत्तक के १२ दिनों के श्राद्ध व अन्य समाज सुधार के पहलुओं पर भी अपनी भावना व्यक्त करने का साहस जुटा पाऊँगा। विधवा विवाह, पुत्र–पुत्रियों में भेद भाव, भ्रूण हत्या इत्यादि। बुजुर्गों के प्रति हो रही उपेक्षा ''मिलनी के चार रुपयों'' को मैंने अपनी सोच के तहत परिभाषित किया है। मेरी सोच के तहत पूवर्जों की भावना संभवत: यही रही होगी। अगर समाज इन तर्कों को उपयुक्त माने व अमल में लाए तो एक अपेक्षित सुधार कालान्तर में हो पायेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

हमारे परिवार में मेरे पू० पिताजी स्व० शुभकरण जी चूड़ीवाला ने जिनकी मृत्यु १०३ वर्ष की उम्र में हुई, ने १९५३ में अपने बड़े पुत्र के विवाह से मृत्यु पर्यन्त अपने ५ पुत्रों, ६ पौत्रों तथा अपनी ५ पुत्रियों तथा १० पौत्रियों में दहेज, पर्दा प्रथा, मिलनी चार रुपयों कागज के या सरकारी सिक्कों में ही किया है। तिलक में १रुपया लड़की पक्ष स्वेच्छा से जो खर्च करने का समर्थ्य रखता है। पुरुष व औरतों की मिलाई चार रुपये बैठा विवाह में मिजवानी तथा औरतों की मिलनी चार रुपये निर्धारित हुई। यही परम्परा निभाई गई, जबकि पुत्रियों तथा पौत्रियों के विवाह में कुछ–कुछ अपने सिद्धान्त से दृष्टि दूर करना पड़ा था।

- नवरतन चूड़ीवाला, ''अलमीराह हाऊस''
२, पुलिस लाईन रोड, भागलपुर-८१२००१

+'समाज विकास' के जून ०८ के अंक के साथ आपका पत्र मिला। भारतवाणी की प्रतिक्रिया के लिए मैं आभारी हूँ। आपने प्रासंगिक रूप में बंगाल के हिन्दी–नाट्य पर संक्षेप में प्रकाश डाला। मैंने एक छात्र को बंगला–हिन्दी नाटक पर तुलनात्मक अध्ययन का विषय दिया था। वे पूरा नहीं कर सके।

आपके द्वारा प्रेषित इस अंक पृष्ठ २१–३२ मेरे लिए बहुत ही उपयोगी हैं। १९७५ में मेरी पुस्तक ''हिन्दी रंगमंच का इतिहास'' प्रकाशित हुई थी। अब इच्छा है कि १९७५–२००० तक की सामग्री देकर उस पुस्तक का दूसरा संस्करण शुरू करूँ। तबियत और उम्र (८२) साथ नहीं दे रही है। एक बार कोलकाता इस हेतु आना है। कृपया नितिमय में 'समाज विकास' पत्रिका भेजते रहियेगा। हम भारतवाणी प्रेषित करते रहेंगे।

-चन्दूलाल दूबे, धारवाड-५८० ००१

+समाज विकास का *ज्योति विशेषांक* पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा। आपने ज्योति प्रसाद अग्रवाल के बारे में इतना सुन्दर व पठनीय तथा संग्रहणीय अंक निकाल कर प्रशंसनीय कार्य किया है। आपका श्रम सार्थक है। बधाई स्वीकारें।

- श्यामसुन्दर अग्रवाल, सम्पादक सामयिकी
बी.३२, सुभाष नगर, भीलवाड़ा-३११००१

ज्योति विशेषांक

+अक्टुबर का समाज विकास का अंक प्राप्त हुआ। रूप कुँवर ज्योति प्रसाद अग्रवाला के जीवन काल का विशेषांक प्राप्त हुआ। श्रद्धेय देवी प्रसाद बागड़ोदिया ने अपने उत्कृष्ट शब्दों में उनकी जीवनी का संक्षिप्त विवरण दिया। उनके जीवन काल की काफी जानकारी प्राप्त हुई। रूप कुँवर ज्योति प्रसाद युग द्रष्टा और युग स्रष्टा थे। इनका शुभगमन उस काल में हुआ जब संपूर्ण असमिया संस्कृति तथा सभ्यता अपने मूल रूप से विछिन्न होती जा रही थी। ज्योतिप्रसाद ने अपनी प्रतिभा से अपनी ओज पूर्ण वांणी से असम की जनता को नई दृष्टि देकर विश्व की प्रगतिशील विशाल सांस्कृतिक धारा के साथ असम की सांस्कृतिक धारा को एकाकार कर दिया।

इनकी गीत कविता ''जागो जननी की सन्तान'' अपने आप में प्रेरणा दायक एवं समाज को जगाने में बड़ी ही सुन्दर कड़ी है।

कर्महीनता को पुरूषता से तुमने कर लिया है जय,
तुम दुर्बल मृतसमान, फिर भी नहीं है भय,
जागो शक्तिमान जागो मातृप्राण।

उपयुक्त उद्धत पंक्तियाँ अपने आप में अद्वितीय है। आज के युग में समाज में फैली विषमता नैतिकता का ह्रास अपनेपन की गिरावट ईर्ष्या का बढ़ावा एवं पाश्चात्य सभ्यता की गहरी छाप से पीड़ित समाज को इन पक्तियों से निश्चित रूप से प्रेरणा मिलेगी। हमारे समाज की समाज विकास पत्रिका अपने आप में एक समर्थ माध्यम हैं। समय समय पर ऐसे सुन्दर आलेखों से समाज को एक सही दिशा का दिग्दर्शन होगा। भविष्य में भी इस पत्रिका से ऐसी जानकारियों को प्राप्त करने की आशा रखते हैं।

- सत्यानारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर (बिहार)

'समाज विकास' का ज्योति विशेषांक (अक्टूबर-२००८) एक गौरवपूर्ण प्रकाशन है। इससे शेखावाटी अंचल की साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय चेतना की गरिमामय अभिव्यक्ति उजागर हुई है। मूलतः मुकुन्दगढ़ (झुंझुनू) के साहित्य सपूत का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रकाशन कर आपने इस अंक को संग्रहणीय बना दिया है। यह एक स्थायी महत्व का प्रकाश पुंज सिद्ध होगा। इसके पिछले अन्य विशेषांक भी साहित्य-जगत के लिए एक विशेष उपलब्धि है। आपका प्रयास स्तुत्य और अनुकरणीय है। इसी प्रकार उत्तरोत्तर विकासमय बना रहे आपका 'समाज विकास'

- डॉ उदयवीर शर्मा
बिसाऊ (राजस्थान)

संपादकीय

धर्म को आगे आना होगा "आतंकवाद खत्म करने के लिए"

यह बात निर्विवाद रूप से हमें स्वीकार कर लेना होगा कि आतंकवाद का जन्म किसी न किसी धर्म की आड़ में हुआ है। भले ही किसी भी धर्म ने इसमें अपनी भूमिका निभाई हो, परन्तु यह सही है कि धर्म का सहारा लिये वगैर आतंकवाद पनप नहीं सकता। पिछले दिनों मुम्बई में हुए आतंकी फिदाइन हमलों ने इस बात को और मजबूत आधार प्रदान किया है। पाकिस्तान प्रायोजित कश्मीर की आड़ में पूरे दक्षिण एशिया सहित पूरे विश्व को इस आतंकवाद ने यह बता दिया कि "यह आतंकवाद धर्म के नाम पर युवाओं को भटका कर लड़ाया जा रहा है, उन्हें धर्म की आड़ में आतंकवाद की तालीम दी जाती है, अन्य धर्म के प्रति उनके कोमल मन में जहर के बीज बोये जाते है।" जबकि कोई भी धर्म- हिंसा एवं आतंकवाद का समर्थन नहीं करता।

आज सारी दुनिया खौफ के वातावरण में अपनी जिंदगी गुजारने को मजबूर हो चुकी है। दुनिया से आतंकवाद का सफाया कर देने का दम भरने वाले राष्ट्र भी इस भय से मुक्त नहीं हो पा रहे। यह तभी संभव हो सकेगा, जब वे राष्ट्र, आतंकवाद के स्त्रोत को, आतंकवाद के नाम पर और इनके खात्मा के लिए सहायता देना बन्द कर दें। यह सर्वविदित है धर्म के जिस बुनियाद पर जो जन्मा हो वह कभी भी नहीं चाहेगा कि उसकी जमीं से धार्मिक कट्टरपंथियों का सफाया हो जाए।

विश्व को चाहिये कि आतंकवाद को अपने नजरिये से देखें न कि किसी देश के बताये नजरिये से। जिस पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) समान धर्म होते हुए भी जो इतिहास रचा था वह किसी से छुपा हुआ नहीं है। वही पाकिस्तान कश्मीर के साथ भी ऐसा भविष्य में नहीं करेगा इस बात की क्या गारंटी है। विश्व इस बात से भले ही भारत से सहमत न हो कि " विश्व में पाकिस्तान आतंकवाद का प्रमुख केन्द्र बन चुका है और जिसने धर्म का सहारा लेकर पवित्र इस्लाम धर्म को विश्व भर में बदनाम करने की नापाक कोशिशें लगातार की है और लगातार करता जा रहा है। " जिसके परिणाम स्वरूप विश्व के अन्य धार्मिक कट्टरवादी संगठनों को पनपने का भरपूर अवसर मिला है।

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रों में इन शक्तियों ने काफी पैठ बना ली है। जिसके परिणाम घातक ही सिद्ध होंगे। किसी भी धर्म को कभी भी न तो आतंकवाद का सहारा लेना चाहिये न कभी देना ही। विश्व भर में आज एक विशेष धर्म को शक की निगाहों से देखा जाना किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं है। किसी एक वर्ग विशेष के अपराध से समूचे धर्म को बदनाम नहीं किया जा सकता। हाँ! उस धर्म के लागों के आचरण जरूर ऐसे दिखने चाहिये कि ऐसे तत्त्वों को जो उनके धर्म को बदनाम करने का प्रयास करते पायें जातें हों, को समाज से अलग-थलग करने जैसे कदम खुलकर उठाये। यह तभी संभव हो सकता है, जब धर्म के पुजारी खुद आगे आकर आतंकवादी घटनाओं का विरोध करें। कहने का तात्पर्य है कि सीधे तौर पर धर्म को आगे आना होगा आतंकवाद समाप्त करने के लिए।

- शम्भु चौधरी

सभी राजस्थानी मारवाड़ी नहीं है एवं सभी मारवाड़ी राजस्थानी नहीं है।

- सीताराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

◆ मारवाड़ी कौन है? धारणा है कि मारवाड़ी शब्द की प्रसिद्धि बंगाल से हुयी। सन् १५६४ से बंगाल के सुलेमान निदानी राजा के समय से मारवाड़ी शब्द का प्रयोग मिलता है। जॉब चारनक ने अपनी डायरी में लिखा है कि " हिन्दुस्तान में मारवाड़ी जाति ही एक ऐसी है जो अन्य जातियों की अपेक्षाकृत व्यापार में विशेष दक्ष एवं ईमानदार है। ईस्ट इंडिया कम्पनी चाहे तो इनसे सहयोग प्राप्त कर अपना व्यवसाय भारत में अधिकाधिक प्रसार कर सकती है।"

◆ जहाँ राजस्थान एवं राजस्थानी शब्दों से वीर संस्कृति की झंकार निकलती है, वहां मारवाड़ी शब्द केवल धन संस्कृति का द्योतक रह गया है। मारवाड़ियों में राजस्थान के इतिहास की कुछ भी विशेषता नहीं मिलती।

◆ मारवाड़ी समाज की ताकत उसके धनवान होने में है, परन्तु वही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी भी है। आज समाज की मुट्ठी में धन नहीं है, धन की मुट्ठी में समाज है।

◆ राजस्थानी जब से मारवाड़ी बना है तब से वह एक प्रदेश (राजस्थान) का नहीं, व्यवसाय में संलग्न एक वर्ग, एक जाति या समाज का प्रतिनिधि है।

◆ विधवा विवाह १९४५ में जब की नागरमल जी लीला का एक विधवा के साथ विवाह हुआ तो समाज में बवाल खड़ा हो गया। अनेक व्यक्तियों को जाति बहिष्कृत होना पड़ा था।

◆ १९२८ के गजट में यह प्रकाशित है कि कोलकाता में जिस महिला ने सर्वप्रथम सभाग्रह समाज में भाग लेकर कारावास किया वह स्वर्गीय इन्दुमती गोयनका थी।

◆ सम्मेलन के बुद्धिजीवी सभापति श्री भंवरमल सिंघी ने १९७३ में रांची में अपने अध्यक्षीय भाषण में परिवर्तन के विषय में कहा था–

◆ "वास्तव में समाज का जो विषय २५ वर्ष पहले विद्यमान था, वह आज नहीं है और भविष्य में और भी अधिक नये नये परिवेश होंगे। अनुभव से सिद्ध है कि या तो मुख्य परिवर्तन का साथ दे और पौरुष पूर्वक परिवर्तन का सारथी बने अथवा परिवर्तन उसे जीवन के क्रम से हटा कर फैंक देगा।"

◆ सेठ नौरंगराय खेतान १८७४ में मारवाड़ी समाज में संभवत: प्रथम मैट्रिक पास व्यक्ति थे।

◆ १९१६ के आसपास मारवाड़ी समाज के सनातनी की कालीप्रसाद खेतान, जो विलायत से बैरिस्टरी पास करके वापस कोलकाता आये थे, को जाति बहिष्कृत किया गया। विलायत जाने को धर्म के विरूद्ध माना जाता था। लेकिन इस कार्रवाई के विरोध में स्वर उस समय भी उभरे थे।

◆ १९०८ में मारवाड़ी एसोशिएशन ने भी जयनारायण पोद्दार के सभापतित्व में वैवाहिक सुधार को लेकर २६ नियम बनाये एवं समाज ने इन नियमों का पालन भी किया।

◆ इसी मारवाड़ी एसोशिएशन के प्रधान कार्यकर्ता श्री रामदेव चोखानी १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रथम सभापति बने।

◆ एक समय था जब समाज का सम्पन्न कोई व्यक्ति समाज सुधार के कार्यों में दिलचस्पी लेता था। एक दिलचस्प घटना १९१७ की है जब कलकत्ता में बड़ी चर्चा थी कि घी में चर्बी मिलाई जाती है। समाज में बड़ा क्षोभ था। मारवाड़ी एसोशिएशन ने घी के व्यावसायियों को बुलाकर उनसे पूछताछ की लेकिन सबने इन्कार कर दिया।

◆ एक दिन प्रात: सर्वश्री रंगलाल पोद्दार, सर हरिराम गोयनका, राय बहादुर, शिवप्रसाद झुनझुनवाला, रायबहादुर विश्वेसरलाल हलासिया, जयनारायण पोद्दार, दौलतराम चोखानी एवं मारवाड़ी एसोसियेशन के मंत्री रामदेव चोखानी दल बांधकर घी के व्यावसायियों के यहां पहुँचे एवं प्रत्येक दुकान गोदाम से एक एक पीपे नमूने के ले गये। जांच से पता चला उसमें चर्बी या मूंगफली के तेल की मिलावट थी। बड़ी सनसनी फैली। एसोशिएशन ने महापंचायत बुलाई, बोर्ड कम्पनी विरोध इन्कार का साहस नहीं कर सका सबके खातों की जांच हुई। जुर्माने किये, जाति बहिष्कृत किया गया। ७५००० रुपये जुर्माने स्वरूप प्राप्त हुआ। इन रुपयों से वृन्दावन में गोचर भूमि खरीद ली गयी। जनमत की शक्ति का संभवत: यह सबसे पुराना एवं अद्‌भुत नमूना है।

अध्यक्षीय

नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रूँगटा जी का प्रथम सम्बोधन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के २१वां राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर आज "दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन" के आतिथ्य में देश की राजधानी दिल्ली में हम सभी एकत्रित हुए है। इस पावन अवसर पर मैं आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएँ देते हुए आप लोगों का अभिवादन करता हूँ।

नमन : आज से ७४ वर्ष पूर्व सम्मेलन की स्थापना हुई, इस लम्बे सफर में हमें कई महानुभावों का मार्ग दर्शन, नेतृत्व एवं सहयोग प्राप्त होता रहा है। उन सभी को भी मैं नमन करता हूँ। इस अवसर पर मैं श्रद्धेय परम आदरणीय श्री नन्दकिशोरजी जालान को भी नमन करते हुए उनके दीर्घायु जीवन की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मैं, श्री सीताराम शर्मा, श्री राम अवतार पोद्दार सहित समस्त पूर्व कार्यकारिणी सदस्यों और सभी प्रान्तीय पदाधिकारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास व्यक्त किया।

सफर : सम्मेलन के इस सफर में जहाँ हमने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की वहीं समाजिक कुरीतियों के विरूद्ध सम्मेलन सदा से कार्य करता रहा है। और आज भी इस दिशा में अग्रसर है। जहाँ हमने पिछले समय सम्मेलन द्वारा पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मृतक भोज जैसी कई सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की, वहीं कई नई सामाजिक कुरीतियाँ जिसमें भ्रूण हत्या, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का आभाव, टूटते व बिखरते परिवार, तलाक की बढ़ती प्रवृति, असहिष्णुता जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ रहा है। हमें इन दिशाओं में एक जुट होकर कार्य करने की जरूरत है।

चुनौतियों : समाज के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के प्रमुख कारणों में समाज में व्यापक आडम्बर एवं दिखावेपन की प्रवृति है। इस प्रवृति को दूर करने के प्रयास होने चाहिए। ये प्रयास अगर दण्डात्मक हुए तो मेरी समझ में ज्यादा सफलता नहीं मिल पायेगी अतः इन्हें दूर करने हेतु वैचारिक एवं संकल्पव्रत प्रयास ज्यादा कारगर सिद्ध होगें। हमें जनजागरण के माध्यम से लोगों को समझाना होगा कि आडम्बर एवं दिखावेपन के दुष्प्रभाव से समाज का क्या और कितना अहित हो रहा है।

सफलता : कहने को मारवाड़ी समाज को साधन सम्पन्न समाज माना जाता है। परन्तु वास्तविकता इस बात को सिरे से नकार रही है। मारवाड़ी समाज का बहुत बड़ा वर्ग नौकरी पेशा से भी जुड़ा हुआ है। विगत वर्षो में समाज कि सोच बदली है एवं हमारे समाज के युवाओं में उच्च शिक्षा ग्रहण करने कि रूचि बढ़ी है। यह और बढ़े तथा ज्यादा संख्या में समाज के युवा उच्चशिक्षा ग्रहण कर प्रशासनिक, तकनीकी, चिकित्सा, व्यावसायिक एवं अन्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करें इसके प्रयास होने चाहिए। हमें अपने समाज के लोगों को परम्परागत व्यवसाय के समक्ष उत्पन्न खतरों के प्रति अगाह करते हुए, वर्तमान समय में प्रासंगिक व्यवसाय को अपनाने की ओर प्रवृत करना होगा ताकी उद्योग एवं व्यवसाय में अपने समाज की जो पकड़ है वो कमजोर ना हो।

संवाद-समन्वय एवं सृजन : हमारा ऐसा मानना है कि संगठन से जुड़े हर व्यक्ति में संवाद–समन्वय एवं सृजन का गुण हो। संवाद–मानसिक वेदना को दूर कर परस्पर भ्रांतियों के निपटारे में सहयोगी सिद्ध होती है। उसी प्रकार समन्वय संगठन में एक दूसरे को सुनने और समझने का सुअवसर प्रदान करता है। सृजन का तात्पर्य है रचनात्मक, जबावदेह एवं पारदर्शी व्यवस्था के निर्माण से लक्ष्य प्राप्ती। किसी भी सामाजिक बदलाव और परिर्वतन तथा विकास के लिए कार्यकर्ताओं में नये कार्यो, नयी योजनाओं को चालू करने की लगन व उत्साह का होना अति आवश्यक है। इस संगठन की स्थापना के समय हमारे अग्रजों ने समाज सुधार एवं समाज विकास के जो सपने संजोए थे, उन सपनों को साकार रूप देने के लिए हमें हर स्तर पर निरंतर प्रयास करते रहना होगा।

राजनीति : मैं समाज के लोगों से आग्रह करना चाहूँगा कि वे राजनीति के क्षेत्र को उदासीनता से न देखें। अपने चुनाव क्षेत्र में जन सम्पर्क बनाना, समाज के लोगों का मतदान के दिनों चुनावी प्रक्रियाओं में हिस्सा लेना, मतदान करना, वोटर लिस्ट में अपने

अध्यक्षीय

नाम दर्ज कराने जैसे कई महत्वपूर्ण कार्य हैं जिसमें समाज को सजग रहना होगा साथ ही राजनीति में भी सक्रिय भागीदारी लें तथा राष्ट्र की प्रगति में सहायक बनें तो हमें खुशी होगी।

क्षेत्रियता की आग : आज समाज के सम्मुख कई चुनौतियाँ है। संकीर्ण राजनैतिक लाभ के लिए क्षेत्रियता की आग भड़काई जा रही है। हमारा समाज प्रवासी समाज है जो देश के हर प्रान्त में अथक परिश्रम एवं व्यापार कौशल के बल पर अपनी आजीविका अर्जित कर रहा है। हमें इस दौर में संगठित रहकर गलत बातों का प्रतिवाद करना होगा। साथ ही स्थानीय समरसता प्रगाढ़ करने के प्रयास करते रहने होगें। हमें स्थानीय समाज में यह विश्वास जागृत करना होगा कि हम जहाँ रहते हैं वहाँ के सर्वांगीण विकास जैसे भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के प्रति भी हमारा योगदान बढ़े इस दिशा में कार्य करना होगा।

राजस्थानी भाषा : सम्मेलन की स्पष्ट मान्यता है कि राजस्थानी भाषा को भारत के संविधान की आठवीं सूची में शीघ्र दर्ज कराया जाए। हम इस गौरवशाली राजस्थानी भाषा मान्यता पर हो रही विलम्बता पर अपना कड़ा प्रतिवाद भी व्यक्त करते हैं। ***"मेरो यो भी जोर रहवोगे कि आपाणे घरां म भी आपाण आपस म राजस्थानी में ही बात करणी चायेजे"।***

युवा एवं नारी शक्ति : मेरा मानना है कि समाज विकास में युवा एवं नारी शक्ति की अहम् भूमिका है अत: सम्मेलन के मार्गदर्शन में नारी एवं युवाओं के संगठनों से बेहतर समन्वय एवं तालमेल बैठाकर समाज सुधार एवं समाज विकास के कार्यों को सुचारू रूप से किया जा सकता है। संगठन को मजबूत करने के लिए आवश्यक है कि प्रान्तीय एवं जिला ईकाई को सक्रिय बनाया जाय। हर शाखा एवं जिला ईकाई वर्ष में कम से कम दो–तीन कार्यक्रमों का आयोजन करे यह सुनिश्चित हो। अगर प्रान्त एवं जिला इकाई सक्रिय हो गई तो राष्ट्रीय ईकाई स्वत: सक्रिय एवं सशक्त हो जायेगी। हमें सम्मेलन से अधिकाधिक लोग जुड़े इसके प्रयास करने होंगे। सम्मेलन के उद्देश्यों कि पूर्ति तब ही संभव है जब समाज के हर घर से कम से कम एक व्यक्ति को हम संगठन से जोड़ पायेंगे।

आभार : इस गौरवशाली संस्था के सर्वोच्च पद हेतु सर्वसम्मति से चुनने के लिए मैं सभी समाज बंधुओं के प्रति आभारी हूँ। अध्यक्ष पद पर निर्वाचन के बाद से सम्मेलन, युवा मंच, महिला सम्मेलन से जुड़े सामाजिक सभी कार्यकर्ताओं ने मुझसे जिस प्रकार सहयोग एवं समर्थन कि बातें की है उससे मेरा उत्साह काफी बढ़ा है। मुझे विश्वास है हम सब मिलकर आने वाले समय में समाज हित में कार्य को आगे बढ़ाने एवं संगठन को मजबूती प्रदान करने में सफल होगें।◆

SHYAM SANITARY PVT. LTD

Showroom : 10, Nirmal chandra street
(Post Box No. - 7830) Kolkata - 700 012
Phone : Shop : 2212-0945/1939, Office : 2221-9959/2215-9058/2237-5253
Fax : 033-2225 6095, 2225 9171 E-mail : dokania@cal2.vsnl.net.in
web page : www.shyamdokania.com
Regd. office : 3, Jadu Nath Dey Road, Kolkata-700 012

Authorised Distributor for :

JOHNSON MARBONITE & PORCELANO, SMRUTI ANEX, SANTOSH WALL TILES, SONET /UNIQUE SANIFTARYWARE, BAJAJ DESIGNER WALL TILES JAIN PLAIN & VITROSSA BORDER TILES, ROKA DESIGNER GLASS BASIN, MIRROR & CABINET, HANSA SHOWER PANEL WOVENGOLD BATH TUB, SHOWER ENCLOSURE & ITALIA / ARTITIQUE GLASS MOSAIC

CP Bath Fittings, Accessories, Steel Sinks, PVC Cistern Seat Cover

New shoppe :

DOKANIA'S
Elegant Bathroom Shoppe

V.I.P. Road, Near Big Bazar,
Baguihati, Kolkata-700 059
Phone : 2576 6718/19/20/21 Fax : 2576 6681

Associated Concern :

ANKIT SANITATION
112, College Street, Kolkata-700 012
Phone : 2237 4019 / 2215 1597

6000 sq. ft. Exclusive Bathroom Shoppe (G+4) of Johnson Parryware & MARC with exclusive range of designer tiles

हवेलियों से दूर हो सकती है गरीबी

- श्री भैरों सिंह शेखावत

२०-२१ दिसंबर २००८ को दिल्ली में २१वां राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत द्वारा किया गया उक्त अवसर पर लिया गया चित्र। बायें से सम्मेलन के महामंत्री सर्वश्री राम अवतार पोद्दार, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, श्री शेखावत नव-नर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दलाल खँगटा, दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद एवं राज आर. के. पुरोहित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वे स्थापना दिवस समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, अध्यात्म साधना केन्द्र, छत्तरपुर, महरौली, नयी दिल्ली में २०–२१ दिसंबर २००८ को हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत के कर–कमलों द्वारा संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री राम निवास मिर्धा, उपस्थित थे।

पूर्व उप राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत ने कहा कि राजस्थान में बंद पड़ी हवेलियों को पर्यटकों के लिए अगर खोल दिया जाए तो इससे यहां की गरीबी काफी हद तक कम हो सकती है। राजस्थान से निकलकर लोग काफी प्रगति कर रहे हैं लेकिन राज्य में अभी भी २१ प्रतिशत लोग गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि राजस्थान में काफी संख्या में हवेलियों पर ताले पड़े हैं। इन हवेलियों में पेंटिंग व अन्य कलाओं की उत्कृष्ठ कृतियां विद्यमान हैं जो प्रशंसकों की बाट जोह रही हैं। इनके माध्यम से यहां न केवल देश भर बल्कि दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। इससे राज्य का कोई नुकसान नहीं होगा बल्कि यहां की अर्थव्यवस्था सम्पन्न होगी।

देश भर से आए मारवाड़ी समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जिस दशा में आप लोग रामगढ़ को छोड़कर गए थे वह आज भी वैसे ही खड़ा है जबकि आपलोग कहां से कहां पहुंच गए। हमें आपकी जरूरत है लेकिन सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर का वास्ता है कि जरूरत होते हुए भी हम कहते रहे हैं कि आपकी जरूरत होगी तो हम आपको यहां बुला लेंगे।

शेखावत ने कहा कि मारवाड़ी समुदाय के काफी संख्या में स्कूल व कालेज खुले हैं और अब अस्पताल खुल रहे हैं। हमें इस बात पर पूरा ध्यान देना होगा ताकि सेवा भाव उद्योग का रूप धारण न कर सके।

पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा ने मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए कहा कि प्रवासी मारवाड़ी समाज ने राष्ट्र की अधिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान किया है। श्री मिर्धा ने कहा कि समाज ने कला, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में भी नयी उपलब्धियाँ हासिल की है। सम्मेलन के साथ अपने पुराने सम्बन्धों की चर्चा करते हुए श्री मिर्धा ने कहा कि किसी भी संस्था के लिये ७४ वर्ष तक सक्रिय रहना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। श्री मिर्धा ने सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा से अपने दीर्घ व्यक्तिगत सम्बन्धों की चर्चा करते हुए कहा कि वे श्री शर्मा के २००६ में भारत के कोने–कोने मे फैले हुए नौ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।

मारवाड़ी सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं

- पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा

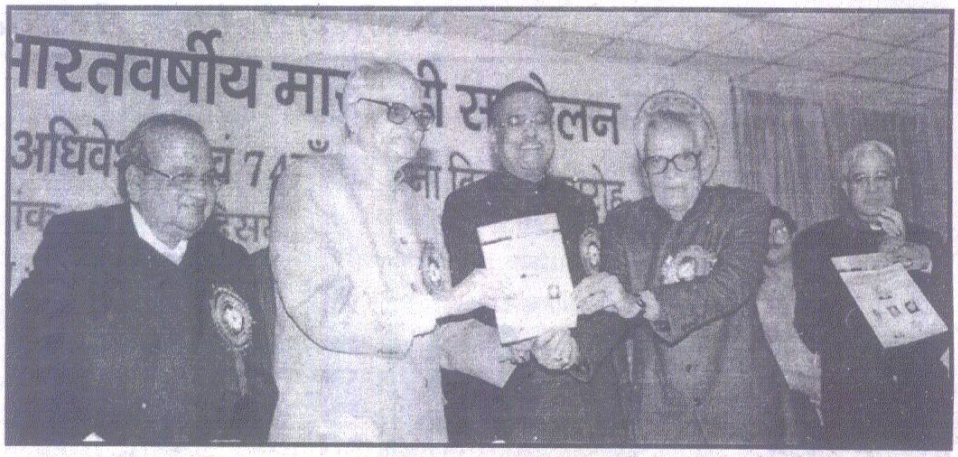

सम्मेलन के मुखपत्र 'समाज विकास' का विमोचन करते हुए भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री रामनिवास मिर्धा

भुवनेश्वर के पदभार ग्रहण करने के अवसर पर भी उपस्थित थे एवं श्री शर्मा ने सम्मेलन को एक नयी ताकत एवं दिशा प्रदान की है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कहा कि मारवाड़ी समाज को २१वीं शताब्दी की नयी ऊँचाइयों में ले जाने में सम्मेलन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मारवाड़ी समाज को अपनी खूबियों एवं अच्छाइयों को बचाकर रखना है व खामियों को दूर करना है। हमें उच्चतम शिक्षा प्राप्त करनी है। उद्योग, व्यवसाय में अपने अग्रणी स्थान को सुरक्षित रखना है। साहित्य, संस्कृति, विज्ञान के क्षेत्र में नयी प्रतिभाओं को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना है। देश के विकास में योगदान देते हुए हमें राजनैतिक जिम्मेदारी निभानी है। समाज सुधार एक निरन्तर प्रक्रिया है। समाज में सुधार एवं वैचारिक परिवर्तन के लिये सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं है।

नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा से पदभार ग्रहण किया एवं अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री रूँगटा ने कहा कि सम्मेलन के इस सफर में जहाँ हमने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की वहीं समाजिक कुरीतियों के विरूद्ध सम्मेलन सदा से कार्य करता रहा है। और आज भी इस दिशा में अग्रसर है। जहाँ हमने पिछले समय सम्मेलन द्वारा पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मृतक भोज जैसी कई सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की, वहीं कई नई सामाजिक कुरीतियाँ जिसमें भ्रूण हत्या, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का अभाव, टूटते व बिखरते परिवार, तलाक की बढ़ती प्रवृति, असहिष्णुता जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ रहा है। हमें इन दिशाओं में एक जुट होकर कार्य करने की जरूरत है। आपने

अध्यक्ष श्री शर्मा निर्वाचित अध्यक्ष श्री रुँगटा को पगड़ी पहनाकर पदभार सौंपते हुए।

आगे कहा कि समाज के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों के प्रमुख कारणों में समाज में व्यापक आडम्बर एवं दिखावेपन की प्रवृति है। इस प्रवृति को दूर करने के प्रयास होने चाहिए। ये प्रयास अगर दण्डात्मक हुए तो मेरी समझ में ज्यादा सफलता नहीं मिल पायेगी अत: इन्हें दूर करने हेतु वैचारिक एवं संकल्पव्रत प्रयास ज्यादा कारगर सिद्ध होंगें। हमें जनजागरण के माध्यम से लोगों को समझाना होगा कि आडम्बर एवं दिखावेपन के दुष्प्रभाव से समाज का क्या और कितना अहित हो रहा है।

इससे पूर्व ***राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पौद्दार*** ने अपनी रपट प्रस्तुत करते हुए कहा कि " सम्मेलन को मजबूत बनाने के दृष्टिकोण से नई प्रान्तीय शाखाओं के गठन पर जोर दिया।

समाज प्रगति के पथ पर अग्रसर

- अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा

नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा

"जहाँ हमने पिछले समय सम्मेलन द्वारा पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मृतक भोज जैसी कई सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की, वहीं कई नई सामाजिक कुरीतियाँ जिसमें भ्रूण हत्या, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का आभाव, टूटते व बिखरते परिवार, तलाक की बढ़ती प्रवृति, असहिष्णुता जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ रहा है। हमें इन दिशाओं में एक जुट होकर कार्य करने की जरूरत है। "- श्री रूँगटा

श्री पोद्दार ने कहा कि हमें खुशी है कि मेरे कार्यकाल के दौरान दो नई प्रान्तीय शाखाओं का गठन हुआ, जिनमें से एक दिल्ली प्रान्तीय शाखा है, जिसके आतिथ्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का २१वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वां स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। दिल्ली शाखा का उद्घाटन २३ दिसम्बर २००७ को हुआ था, जिसमें श्री पन्नालाल वैद अध्यक्ष एवं श्री गोयनका ने महामंत्री का पद्भार ग्रहण किया था। हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि यह शाखा बहुत जोर शोर से कार्य कर रही है" आपने अपनी रपट में बताया कि– नागपुर में १३ जून २००६ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में श्री सीताराम शर्मा को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया था। तत्पश्चात् भुवनेश्वर में ५–६ अगस्त २००६ को सम्मेलन के २०वें राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री सीताराम शर्मा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद्भार ग्रहण करने के पश्चात् मुझे राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व सौंपा। तब से लेकर नवम्बर २००८ तक के कार्यकाल में सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यों का संक्षिप्त ब्योरा दिया।

श्री कन्हैया लाल जैन, (चेयरमैन के.एल.जे. ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज) समारोह के स्वागत अध्यक्ष थे। इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा से नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने पद भार ग्रहण किया।

अखिल भारतीय स्तर की यह सामाजिक संस्था समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने एवं समाज सुधार का कार्य करने हेतु लगातार प्रयत्नशील है। अधिवेशन के दौरान कई प्रस्ताव पास किये गये जिसमें मुख्यत: राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। देश की आंतरिक सुरक्षा एवं खुफिया तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है एवं समाज के सभी वर्ग को ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए एकजुट होकर धार्मिक संकीर्णता, जातीयता एवं प्रांतीयता की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि रखना चाहिए।

संगठन को मजबूत करने के लिए शाखा, प्रांत एवं केन्द्रीय स्तर पर संस्था को मजबूत बनाने का बीड़ा उठाया गया।

परिवर्तनों एवं सुधारों के बावजूद समाज के सामने आज आडम्बर एवं अपव्यय जैसी विराट समस्याएं हैं। इनसे निपटने के लिए सिद्धान्त एवं आचरण की एकता बनाने एवं आदर्श मूल्यों, समाज में सादगी, सहिष्णुता, त्याग, मितव्ययता, परिश्रमशीलता एवं परोपकार के गुणों को पुर्नस्थापित करने का निर्णय लिया गया।

२० दिसम्बर की संध्या ६ बजे अध्यक्ष श्री नन्द लाल रूँगटा जी का उपस्थित प्रतिनिधियों का स्वागत के साथ प्रतिनिधि सभा प्रारम्भ हुई।

२१वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वां स्थापना दिवस समारोह

राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००८

जनचेतना के विप्लवी यायावर रचना धर्मी

श्री ओंकार श्री

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत जनचेतना के विप्लवी यायावर रचना धर्मी श्री ओंकार श्री को "राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००८" देते हुए। साथ में सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा व निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा

सम्मेलन के पदाधिकारीगण (२००८-२०१०)

अध्यक्ष :

श्री नन्दलाल रूँगटा (चाईबासा)।

उपाध्यक्ष :

सर्वश्री हरिप्रसाद कानोड़िया, डॉ. रामविलास साबू, राज के. पुरोहित,
गणेश प्रसाद कन्दोई, बद्रीप्रसाद भीमसरिया व ओमप्रकाश खंडेलवाल।

महामंत्री :

श्री राम अवतार पोद्दार

संयुक्त महामंत्री :

श्री ओमप्रकाश पोद्दार व श्री संजय हरलालका

कोषाध्यक्ष :

श्री आत्माराम सोंथलिया

२१वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वां स्थापना दिवस समारोह

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत के साथ अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए।

मनोनयन एवं पुनर्गठन हेतु प्रस्ताव

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह २१वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन (२०–२१ दिसम्बर २००८, नई दिल्ली) राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा को संविधान की धारा २० में उल्लेखित शेष पदाधिकारियों एवं धारा १० में उल्लेखित राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सभी सदस्यों के मनोनयन एवं पुनर्गठन के लिए सर्वसम्मति से अधिकृत करता है।

प्रस्तावक : सीताराम शर्मा
समर्थक : हरिप्रसाद कानोड़िया
इस प्रस्ताव को करतल ध्वनि के बीच सर्वसम्मति से पारित किया गया।

कोषाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने वर्ष २००६–०७, २००७–०८ को अपने कार्यकाल का आय–व्यय ब्यौरा प्रस्तुत किया। जिसे चर्चा के उपरांत सर्वसम्मति से पारित किया गया।

.....जारी पृष्ठ १५ से

इस आयोजन को सफल बनाने में सर्वश्री बुद्धसिंह सेठिया, बसंत पोद्दार, श्यामसुन्दर मौसूण (जे.के.जे. ज्वैलर्स), नरेश गुप्ता (रोका), संदीप जोशी, श्यामसुन्दर चमड़िया (ब्राईटर ग्रुप), बजरंग लाल गुप्ता (आई.टी.एल.) राजकुमार केड़िया, कैलाश जाजोदिया, निर्मल कुमार भंसाली, श्यामसुन्दर सोनी व श्रीमती उषा रामजी सरिया का योगदान उल्लेखनीय है।

नव–निर्वाचित अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने निवर्त्तमान अध्यक्ष की सीताराम शर्मा के नेतृत्व की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि सम्मेलन को जो नयी ऊँचाई श्री शर्मा ने दी है उसे बनाये रखना मेरे समक्ष एक चुनौती है। मैं उनके मार्गदर्शन एवं सहयोग की कामना करते हुए उनके सफल कार्यकाल के लिये हार्दिक बधाई देता हूँ।

इस मौके पर राजस्थानी भाषा के साहित्यकार व पत्रकार ओंकार श्री को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर राजस्थानी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। लगभग चार दशक पश्चात् दिल्ली में मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन आयोजित हुआ है।

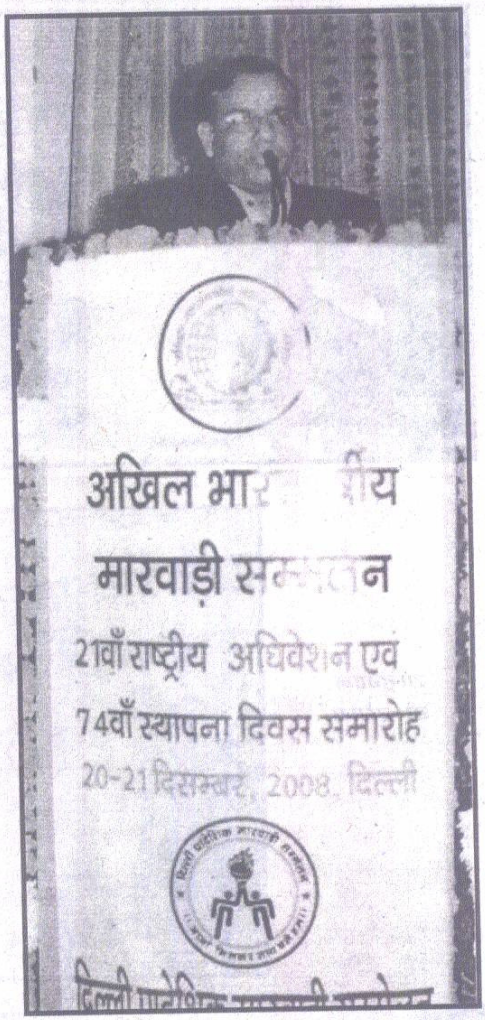

प्रान्तीय मन्त्री श्री पवन गोयनका

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री पन्नालाल बैद भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत के साथ बातचीत करते हुए।

२१वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वां स्थापना दिवस समारोह

भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरों सिंह शेखावत को सम्मानित करते हुए उपाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल

राष्ट्रगान के समय

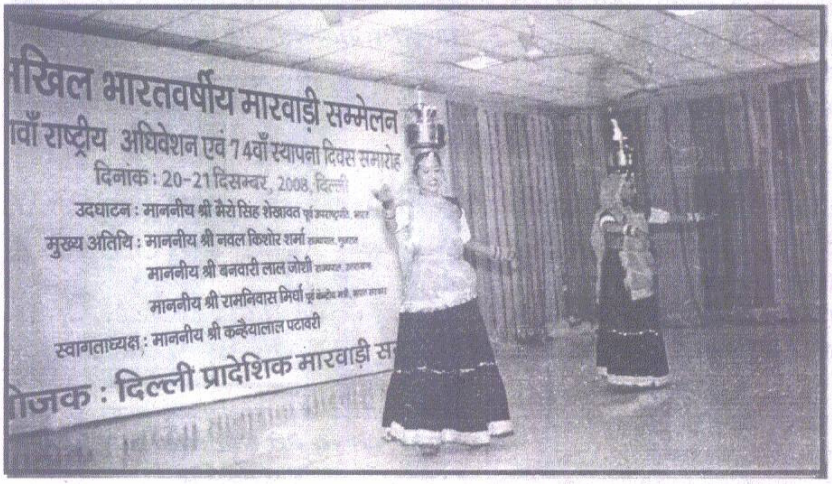

सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक

दिल्ली अधिवेशन द्वारा
सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव

राष्ट्रीय एकता संगठन एवं समाज सुधार पर महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित

प्रस्ताव - १

राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा

सम्मेलन ने सदैव राष्ट्रीय सुरक्षा एवं एकता को सर्वोपरि माना है। हाल की कतिपय घटनाओं विशेषकर मुम्बई में आतंकवादी हमले से आम नागरिकों के जान–माल की सुरक्षा के सम्बंध में चिन्ता बढ़ी है। आतंकवाद एक गम्भीर चुनौती एवं खतरा बनकर हमारे सामने खड़ा है। देश के भीतर एवं बाहर विघटनकारी ताकतें राष्ट्र को कमजोर करने का षडयंत्र रचा रही हैं।

ऐसी संकट कालीन स्थिति में कुछ प्रांतों में 'भूमि पुत्र' या 'धरती पुत्र' का नारा उठा कर देश की एकता को खंडित करना चाहते हैं। एक जगह 'भूमि पुत्रवाद' की शुरुआत हुई तो अन्य राज्यों में प्रतिक्रिया स्वाभाविक है एवं इसके भीषण परिणाम होंगे।

पृथकवादी, प्रांतीयता, क्षेत्रवाद एवं संकीर्ण मनोवृत्ति देश की एकता एवं सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा उपस्थित कर सकती हैं। ये नारे प्रायः राजनीति के कंधों पर चढ़ कर बोले जाते हैं। हमें बहुत सावधान रहना है। इस तरह की मनोवृत्ति को पनपने के पहले ही नेस्तनाबूद करना होगा।

आतंकवाद राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है। देश की आतंरिक सुरक्षा एवं खूफिया तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों का एकजूट होकर सामना करने के लिए धार्मिक संकीर्णता, जाति, प्रांतीयता आदि की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीय एकता को बनाकर रखना है।

प्रस्तावः ओंकारमल अग्रवाल, समर्थकः विनोद तोदी

प्रस्ताव-२

संगठन

सम्मेलन निश्चित रूप से आज भी सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है। यह सम्मेलन एकमात्र संस्था है जो मारवाड़ी समाज में जागृति और विचार परिवर्तन लाने का कार्य कर रहा है। सम्मेलन पूरे मारवाड़ी समाज का जाति–निर्विशेष समाजिक संगठन है। सम्मेलन एक विचार संस्था है जिसका कार्य प्रगति की दिशा में, सुधार के कार्यों के लिए विचार परिवर्तन का प्रयास करना है।

मारवाड़ी समाज के लोग सम्पूर्ण देश में फैले हुए हैं और उनकी संख्या करोड़ों में है। १९३५ में स्थापना काल में विभिन्न जातिगत सामाजिक संस्थाएं थी लेकिन कोई संस्था जो पूरे मारवाड़ी समाज का प्रतिनिधित्व कर सके ऐसी एक भी संस्था नहीं थी।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन जिसकी स्थापना ७३ वर्ष पूर्व हुई लेकिन दुर्भाग्यवश आज तक सम्पूर्ण मारवाड़ी समाज की सही मायने में प्रतिनिधि संस्था का रूप नहीं ले सकी है। यद्यपि सारे मारवाड़ी समाज की तरफ से बोलने का अधिकार केवल इसी संस्था को है।

हमें सम्मेलन के केंद्रीय कार्यालय को और अधिक संगठित करना हैं। हमारी प्रांतीय एवं जिला शाखाएं बढ़ानी है, नये सदस्य बनाने है एवं वर्तमान प्रांतीय सम्मेलनों को सक्रिय एवं संगठित करते हुए एक मजबूत केंद्रीय संस्था को खड़ा करना है। समाज की यह आज की आवश्यकता है।

प्रस्तावः विश्वनाथ मोरोठिया, समर्थकः लोकनाथ डोकानिया

प्रस्ताव - ३

समाज सुधार

पिछले सात दशकों में मारवाड़ी समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। नये विचार, नई चेतना के साथ मारवाड़ी समाज के स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। ४०–५० के दशक में समाज के रूढ़िवादी, पुराणपंथी पक्षों के घोर विरोध के बावजूद पर्दा प्रथा, बालिका शिक्षा, दहेज आदि विषयों पर घोर आंदोलन हुए एवं कतिपय क्षेत्रों में महत्वपूर्ण सफलताएं प्राप्त हुई।

वास्तव में समाज का जो स्वरूप २५–३० वर्ष पहले विद्यमान था, वह आज नहीं है और भविष्य में और अधिक परिवर्तन होंगे। हमें परिवर्तन का स्वागत करने एवं अपने जीवन को नये विचारों के अनुरूप ढालने के लिए सदैव तत्पर रहना है।

परिवर्तनों एवं सुधारों के बावजूद समाज के सामने आज भी कई प्रश्न है। आडम्बर एवं अपव्यय पर हम रोक नहीं लगा पाये हैं। सिद्धांत एवं आचरण की एकता का अभाव है। आदर्शों एवं मूल्यों में लगातार गिरावट आ रही है। समाज में सादगी, सहिष्णुता, त्याग, मितव्ययिता, परिश्रमशीलता एवं परोपकार भावना के जो गुण थे उनमें लगातार कमी आ रही है। इन गुणों को, हमारी संस्कृति को यदि हम भूला देंगे तो हम हमारी उपलब्धियों को ही खो देंगे। समाज में नयी खामियाँ एवं कमजोरियां उभर रही है–बड़ों के प्रति सम्मान में कमी, टूटते परिवार, बढ़ते तलाक, बढ़ता पैसे का महत्व, समाज सेवा के प्रति उदासीनता आदि।

सम्मेलन का मुख्य कार्यक्रम एवं नारा है समाज सुधार एवं समरसता। समाज सुधार एक निरंतर प्रक्रिया है। अगर हमें अपने समाज की श्रेष्ठता को बचाकर रखना है तो हमें लगातार अपनी कमियों एवं खामियों को सुधारते रहना होगा।

प्रस्तावः भागचन्द पोद्दार, समर्थकः महेश जालान

२१वां राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४वां स्थापना दिवस समारोह

संविधान संशोधन :-

सम्मेलन के संविधान में महत्वपूर्ण संशोधन पारित दोहरी सदस्यता पर ऐतिहासिक निर्णय

श्री नन्दलाल रूँगटा संविधान संशोधन सम्बन्धी प्रस्ताव रखते हुए संसोधन के औचित्य पर प्रकाश डाला।

धारा २० उप धारा (२)

(२) साधारण अधिवेशन के सभापति सम्मेलन के सभापति होंगे। शेष पदाधिकारियों का मनोनयन निर्वाचित सभापति के द्वारा किया जाएगा। पदाधिकारियों का कार्यकाल दो वर्ष का होगा, किन्तु जब तक नवीन चुनाव ना हो जाएगा तब तक वही पदाधिकारी कार्यभार सम्हाले रहेंगे। लेकिन किसी कारणवश ४ वर्ष के अन्दर नए पदाधिकारियों का चुनाव नहीं हो पाता है तो चालू पदाधिकारी स्वत: ही अपने पद से मुक्त माने जायेंगे और अखिल भारतीय समिति को अधिकार होगा कि तीन महीने में नए पदाधिकारियों का आगामी अधिवेशन बुलाने के लिए चुनाव कर लेंवे। ऐसे पदाधिकारियों का कार्यकाल अधिकतम एक वर्ष होगा।

धारा २१ उप धारा क (३)

सम्मेलन के कार्यों के सुचारू संपादन हेतु ६ उपसभापति, १महामंत्री, २ संयुक्त महामंत्री तथा १ कोषाध्यक्ष का मनोनयन करना तथा इनके स्थान में हुई रिक्तता की पूर्ति करना। सम्मेलन के किसी भी पदाधिकारी को कोई कार्य करने को प्राधिकृत करना और उनका मार्ग दर्शन करना।

धारा ५ उप धारा २ (अ) सदस्य

सम्मेलन के सदस्य तीन प्रकार के होंगे :—

(अ) विशिष्ट सदस्य (ब) आजीवन सदस्य (स) संरक्षक सदस्य।

नोट :— संविधान एवं नियमावली में जिन स्थानों पर साधारण विशिष्ट सदस्य उल्लेखित हैं उन सभी को विशिष्ट सदस्य के रूप में परिवर्तित समझा जाए।

धारा ५ उप धारा २ (क)

(क) केंद्रीय सम्मेलन को कम से कम ५००/— रूपये वार्षिक शुल्क दें, वह व्यक्ति सम्मेलन का केन्द्रीय तथा संबंधित प्रांत का विशिष्ट सदस्य माना जाएगा।

(ख) केंद्रीय सम्मेलन को कम से कम ५०००/— रूपये की राशि दे, वह व्यक्ति सम्मेलन का केन्द्रीय तथा संबंधित प्रांत का आजीवन सदस्य माना जाएगा।

(ग) केंद्रीय सम्मेलन को कम से कम एकमुस्त ५१०००/— रूपये दे , वह व्यक्ति/फर्म/कम्पनी अथवा ट्रस्ट सम्मेलन का केन्द्रीय तथा संबंधित प्रांत का संरक्षक सदस्य माना जाएगा।

(घ) विशिष्ट/आजीवन तथा संरक्षक सदस्यता से प्राप्त राशि का ५० प्रतिशत हिस्सा संबंधित प्रांतीय ईकाई को केंद्रीय समिति के द्वारा दिया जाएगा। आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता से प्राप्त राशि कोष के रूप में रहेगी। इस कोष का ब्याज ही खर्च किया जा सकता है। अखिल भारतीय समिति की अनुमति से कोष की राशि अचल सम्पति के क्रय/निर्माण आदि के लिए खर्च की जा सकती है।

धारा ५ अ (३)

३. सभी स्थानों पर सदस्यता आवेदन पत्र अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के नाम से होगें।

धारा ५ अ (४)

४. किसी व्यक्ति का सदस्यता आवेदन पत्र अस्वीकार करने या सदस्यता से हटाने का अधिकार केंद्रीय सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति को होगा।

नोट:- वर्तमान में जो व्यक्ति सम्मेलन की केंद्रीय समिति के आजीवन एवं संरक्षक सदस्य हैं वे स्वत: संबंधित प्रांत के सदस्य माने जाएंगे तथा प्रांतीय ईकाईयों द्वारा बनाये गए
आजीवन तथा संरक्षक सदस्यों की केंद्रीय समिति भी सदस्यता प्रदान करेगी।

धारा - ९

९. अखिल भारतीय समिति :— उप धारा(५) इस समिति के सदस्यों का चुनाव निम्नलिखित रूप से होगा, के उप नियम (ग) के बाद जोड़ा जाएगा।

प्रस्ताव:-

सम्मेलन के संरक्षक सदस्य अखिल भारतीय समिति के सदस्य होंगे। अगर संरक्षक सदस्य कोई फर्म/कम्पनी अथवा ट्रस्ट है तो वह इस समिति के सदस्य के रूप में एक मालिक अथवा निर्देशक स्तर के प्रतिनिधि को अधिकृत करेगा जो मारवाड़ी समाज का होना चाहिए।

धारा - १० उप धारा (३)

१०. कार्यकारिणी समिति :—

(३) कार्यकारिणी समिति में सम्मेलन के पदाधिकारियों के अतिरिक्त न्युनतम १० और अधिकतम ३० सदस्यों का मनोनयन अखिल भारतीय समिति के द्वारा सभी राज्यों से किया जाएगा। इन मनोनीत सदस्यों में प्रत्येक प्रदेश का कम से कम एक विशिष्ट सदस्य कार्यकारिणी में अवश्य होना चाहिए।

(४) कार्यकारिणी समिति में अध्यक्ष को दस सदस्य मनोनीत करने का अधिकार होगा। अध्यक्ष द्वारा मनोनीत सदस्यों में कम से कम दो आजीवन एवं दो संरक्षक सदस्य होने चाहिए।

प्रस्तावों पर हुई बहस का एक हिस्सा

प्रस्ताव-१ : राष्ट्रीय एकता एवं सुरक्षा

प्रस्ताव पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओंकारमलजी अग्रवाल ने अध्यक्ष के आदेशानुसार एकता एवं राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बंधित पहला प्रस्ताव रखा।

श्री विनोद तोदी (पटना)

राष्ट्र की एकता को अक्षुण रखने के लिए कड़े से कड़े कानून बनाने का प्रस्ताव सरकार को भेजा जाय।

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया

हमारा लोगो है **''म्हारो लक्ष्य - राष्ट्र री प्रगति''** राष्ट्र की तथा आर्थिक प्रगति एकता के बिना नहीं हो सकती। आंतरिक सुरक्षा पर १७–१८ एजेंसियों की जगह एक एजेंसी हो। देश को धर्म के नाम पर बांटने की साजिश हो रही है। इसके लिए संविधान में विशेष संशोधन की आवश्यकता है। सम्बंधित प्रस्ताव प्रधानमंत्री के पास भेजा जाना चाहिए।

श्री नागरमलजी बाजोरिया

आने वाली पीढ़ी राजनीति में नहीं आयेगी तो आतंकवाद खत्म नहीं होगा। राजनीतिज्ञ देश में आतंकवाद फैलाते हैं। मारवाड़ी सम्मेलन पार्टी बनाये और चुनाव लड़े।

श्री विनोद जी अग्रवाल

प्रस्ताव में एक कमी है। मारवाड़ी सम्मेलन की आतंकवाद को रोकने में क्या भूमिका होगी? हम कैसे लड़ें, क्या करें, इस पर चिंतन जरूरी है।

प्रस्ताव-२ : संगठन

पूर्व उत्कल अध्यक्ष श्री विश्वनाथ मारोटिया ने संगठन पर प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

अध्यक्ष पूर्वोत्तर श्री विजय कुमार लूणिया, (आसाम)

सम्मेलन की स्थापना को ७३ साल हो गये, पर जो स्थान मिलना चाहिए था, नहीं मिला। किसी भी संस्था का संविधान महत्वपूर्ण होता है, पुराने संविधान में बदलाव की जरूरत है। शाखाओं का शायद कोई संविधान नहीं है। राष्ट्रीय, प्रादेशिक, शाखा स्तर पर संविधान बनाना होगा। सभी प्रांतों व शाखाओं द्वारा त्रैमासिक रिपोर्ट भेजी जाये।

पूर्व अध्यक्ष (बंगाल) श्री लोकनाथ डोकानिया

महिला मंच, युवा मंच सभी मिल जाएं तो संगठन मजबूत होगा। सभी लोग थोड़ा थोड़ा समय समाज के लिए दें, अन्यथा संगठन का कुछ नहीं होगा।

श्री मुरलीधर केडिया (झारखंड)

संगठन में ही शक्ति होती है। जितने अधिक सदस्य होंगे, अध्यक्ष की शक्ति उतनी ही अधिक होगी। पैसे से नहीं, व्यक्ति से संगठन मजबूत होगा। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को कैसे सदस्य बनाकर सम्मेलन से जोड़ा जाय, इस ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। आगामी दो साल में १० लाख सदस्य बनाने का लक्ष्य निर्धारित हो।

श्री विनोद तोदी

हम कहने को तो अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य हैं। लेकिन आत्मलोचन करेंगे तो पायेंगे कि हम सीमित लोगों का नेतृत्व करते हैं। हमारी पूरे भारत वर्ष में शाखा नहीं है। सम्मेलन को राष्ट्रीय स्तर पर देखना चाहते हैं तो शाखा स्तर पर सम्मेलन को मजबूत करें। शाखा मजबूत नहीं होगी तो संगठन मजबूत नहीं होगा। क्या अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक इकाइयों पर कोई पकड़ है। १५८ शाखाओं वाली है बिहार प्रान्तीय इकाई। लेकिन कोई शाखा प्रान्त की नहीं सुनता है। अधिकांश शाखाओं में १०–२० सालों से चुनाव नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में संगठन को मजबूत नहीं कर सकते। कार्यकर्ताओं को बढ़ाने की आवश्यकता है। अखिल भारतीय पदाधिकारियों को प्रान्तों तथा शाखाओं का दौरा करना चाहिए। धन संग्रह करने की जानकारी दी जानी चाहिए। प्रदेश की रिपोर्ट राष्ट्रीय अधिवेशन में पेश की जानी चाहिए। महामंत्री ने सिर्फ अपने द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी दी है। प्रदेश व शाखाओं के कार्यों की कोई जानकारी नहीं दी है।

श्री भंवरलाल खण्डेलवाल, टाटनगर

सम्मेलन के अध्यक्ष प्रान्तों का दौरा करें। वहां बैठक बुलाएं, मीटिंग में कोई भव्यता न हो। छोटी–छोटी संस्थाएं भव्यता से डर जाती हैं। कम खर्च में मीटिंग होगी तो कोई प्रान्त हिचकिचायेगा नहीं। सदस्य बनाने के लिए हर प्रान्त के व्यक्ति गावों में जाने का प्रयास करें। सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को तनख्वाह मिले। आजीवन सदस्य की राशि ११००/– से अधिक न हो।

श्री पन्नालाल बैद, (दिल्ली)

आवश्यकता है मंथन की। क्या कारण है कि हर जगह कुछेक चेहरे ही नजर आते हैं। क्या नये लोग नहीं हैं? हमें नये लोगों के लिए जगह खाली करनी होगी। यह विसंगति सभी समाज में है। पुराने लोग पद से चिपके रहते हैं। उनको त्याग

करना होगा। हम एक दूसरे की कमियां निकालते रहते है। इस आदत को सुधारना होगा। समय, अर्थ सब कुछ देने के बाद पदेन अधिकारियों को विरोध का सामना क्यों करना पड़ता है। कमियां क्यों निकाली जाती है। हमें एकजुट होना होगा। जिस दिन हम एक दूसरे की प्रशंसा करना सीख लेंगे तभी हम संगठित और मजबूत होंगे।

श्री प्रमोद गोयनका, (कोलकाता)

संगठन की शक्ति बढ़ानी होगी। राज्यों, जिलों में जनसम्पर्क के लिए के केन्द्रीय जनसंपर्क कार्यालय की जरूरत है। क्या कारण है कि शाखाएं प्रान्तीय इकाई से संपर्क नहीं करती हैं। जनसम्पर्क प्रतिनिधि बनाएं। दो साल का कार्यक्रम बनाकर चलें तो विश्व का सर्वोपरि संगठन बन सकता है।

डॉ. बसंत कुमार मित्तल

संगठन की दृष्टि से एकल सदस्यता का स्वागत करता हूं। वर्ष २००९–१० को संगठन वर्ष घोषित किया जाय। मारवाड़ी समाज की राजनैतिक चेतना भी शून्य है। राजस्थानी सांसद, पूर्व सांसद, विधायक, पूर्व विधायक, पार्षद, पूर्व पार्षद को सम्मेलन से जोड़ा जाय। अग्रवाल, ब्राह्मण, माहेश्वरी, जैन, खण्डेलवाल, ओसवाल जो अपनी इकाई चला रहे हैं – उनके पदाधिकारियों से मिलकर मारवाड़ी सम्मेलन की इकाई तैयार की जाए। समाज विकास में राज्यवार कार्यों का ब्यौरा हो जिससे वे प्रान्त व शाखाएं आत्ममंथन कर सकें कि हमने क्या किया है। प्रत्येक राज्य में सम्मेलन का भवन व कार्यालय सुनिश्चित कराया जाए। इसकी व्यवस्था केन्द्र करें।

श्री रमेश केजड़ीवाल, पूर्व अध्यक्ष बिहार

संगठन में जो भी पदाधिकारी आते हैं उन्हें पुराने पदाधिकारियों के क्रियाकलापों का आकलन जरूर करना चाहिए। संगठन से गरीब तबके के लोगों को जोड़ना जरूरी है। कोष बनाकर गरीब लड़कियों की शादी की व्यवस्था की जाए। गरीबों के लिए घर की व्यवस्था हो। समाज में ७० प्रतिशत गरीब हैं। सरकार से मदद भी मिलती है – पदाधिकारी चेष्टा करें।

श्री विश्वनाथ सिंघानिया, उपाध्यक्ष बंगाल

लोग कहते हैं बदलता है जमाना अक्सर
मर्द वो है जो जमाने को बदल देते हैं।

सम्मेलन की डायरेक्टरी प्रकाशित करनी चाहिए। समाज में सेवारत किसी एक व्यक्ति का परिचय प्रत्येक माह समाज विकास में प्रकाशित हो। ताकि समाज के लोगों को उनसे प्रेरणा मिले और वे उनकी सेवा ले सकें।

श्री सीताराम बाजोरिया (बिहार)

गत पदाधिकारियों द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा करें। अच्छे कार्यों को दुबारा किया जाए। पूरे देश में समाज के खिलाफ कोई घटना घटने पर सामूहिक विरोध होना चाहिए। पुरानी धर्मशालाओं को व्यवसाय का रूप दे दिया गया है। नई धर्मशाला नहीं बन रही है। संगठन को मजबूत करने के लिए मूलभूत स्तर से कार्य करना होगा।

श्री किशोरीलालजी

संगठन से शक्ति होती है। मनोनीत पदाधिकारी सही ढंग से कार्य नहीं करते हैं। इसके लिए अध्यक्ष भी दोषी है। शाखाओं को मजबूत करना होगा। जो पदाधिकारी अक्षम हो, जिनके पास समय न हो, ऐसे पदाधिकारी पद छोड़ें।

श्री नथमल टिबड़ेवाल (अध्यक्ष, बिहार)

सम्मेलन को सार्थकता बनाये रखने के लिए कार्यक्षमता बढ़ानी होगी। संगठन को मजबूत करने के लिए शाखाओं का दौरा आवश्यक है।

श्री सीताराम अग्रवाल (कोलकाता)

संगठन के सदस्य अधिक हों, नीति व आदर्श का पालन करें। मीडिया के माध्यम से राष्ट्रीय अधिवेशन की बात देश के करोड़ों मारवाड़ियों तक पहुँचाने का प्रयास हो। सम्मेलन की गतिविधियों अखबारों के माध्यम से आम जनता तक पहुंचे, तब मजबूती आयेगी। फील्ड में काम मध्यम वर्ग ही करेगा, उसे जोड़ना होगा तभी संगठन मजबूत होगा। समाज के युवकों को पत्रकार बनाना होगा। कार्यकर्ताओं को सम्मान देना होगा। जनगणना अभियान चलाना होगा।

श्रीमती अर्चनाजी नाहटा

अध्यक्ष अकेला कुछ नहीं कर सकता। उसके पास समय का अभाव रहता है। सिर्फ एकता की बात करने से नहीं होगा, यथार्थ में हमें लागू भी करना होगा। आपसी द्वेष न हो, मिलकर काम करें तभी संगठन मजबूत होगा। राजनीति में कामयाब होना है तो आपसी मतभेद भुलायें।

श्री गाड़ोदियाजी

हम अपनी जड़ से जुड़े हुए नहीं है। हमारी मूल उत्पत्ति मारवाड़ से हुई है, वहां हमारा कोई संगठन नहीं है। अगला अधिवेशन जयपुर में हो।

निवर्तमान अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने उठाये गये उपरोक्त प्रश्नों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन किसी भी संस्था का प्राण होता है। देश के प्रान्तों एवं

जिलों में सम्मेलन बसता है। जमीनी स्तर पर जुड़ना है तो शाखाओं को सक्रिय एवं विस्तार करना होगा। देश के हर प्रान्त में प्रान्तीय सम्मेलन की स्थापना हो। प्रादेशिक शाखाओं में कुछ ज्यादा, कुछ कम सक्रिय हैं, कुछ निष्क्रिय हैं।

संविधान के अंतर्गत केन्द्रीय सम्मेलन का प्रादेशिक इकाइयों पर एक सीमित अंकुश है। प्रादेशिक इकाइयों की नियमावली में परिवर्तन प्राय: केन्द्रीय सम्मेलन की सहमति से होना चाहिए। लेकिन ऐसा होता नहीं है।

हर अधिवेशन के पहले प्रान्तों को तीन पत्र भेजकर रिपोर्ट व फोटो मांगी गयी थी, ताकि समाज विकास में प्रकाशित हो सके। लेकिन प्रान्तीय सम्मेलन मासिक, त्रैमासिक यहां तक कि वार्षिक रिपोर्ट भी नहीं भेजते हैं। समाज के ज्यादातर धनाढ्य लोग सम्मेलन से नहीं जुड़े हैं। सम्मेलन समाज सुधार की बात करता है इसलिए धनाढ्य वर्ग कटा हुआ है। सम्मेलन की उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को समझाना होगा।

समाज सुधार के लिए युवा और महिला वर्ग परिवर्तन ला सकता है। गत एक दो वर्षों में युवा मंच के मंचों से समाज सुधार पर जोर दिया जा रहा है।

कलकत्ता सब बुराईयों की जड़ है जो सारे देश में फैलती है। पैसा देकर लोग प्रचार करवाते हैं। इससे ईमानदार कार्यकर्ता निरस्त हो जाते हैं। जो लोग कोई कार्य नहीं करते, पैसे के बल पर प्रचार में छाये रहते हैं।

संगठन को मजबूत करना है। केन्द्र, प्रांत, सभी जिला शाखा मिलकर कार्य करें। यह कार्य कठिन है, समय लगेगा। आने वाले दो वर्षों में एक लाख नये सदस्य बनाने का संकल्प लें।

प्रस्ताव - ३ : समाज सुधार

अध्यक्ष श्री भागचंदजी पोद्दार, झारखंड ने समाज सुधार प्रस्ताव रखते हुए। नवयुवकों व महिलाओं के विचारों का आदान प्रदान होना चाहिए। उनके बिना यह प्रस्ताव पूरा नहीं हो सकता है। तभी फिजूलखर्ची, दिखावा, आडम्बर पर रोक लगेगी।

श्री बंशीलाल बाहेती (कोलकाता)

यह प्रस्ताव अपने आप में पूर्ण नहीं है। सारे विश्व में आर्थिक रूप से विचार की बातें उठ रही हैं। हम चिंतित नहीं हैं। नई पीढ़ी के सामने सोच नहीं है। छोटे छोटे उद्योग लगाये जायें। आर्थिक सुधार से सामाजिक सुधार को जोड़ना होगा। युवा पीढ़ी को कार्यक्रम देना होगा। गांधीजी के औद्योगिक विकास पर किये गये प्रयास का उल्लेख किया।

श्री गीतेश शर्मा (कोलकाता)

राजनैतिक अधिकारों के लिए सम्मेलन की शुरूआत हुई थी और एक वर्ष बाद ही समाज सुधार में तब्दील हो गया। स्व. भागीरथ कानोड़िया, स्व. भंवरलाल सिंघी के ज़माने में सार्थक प्रयास हुआ, समाज सुधार हुआ। पहले पदाधिकारी समाज सुधार का पालन करके दिखायें, तभी सार्थक होगा। समाज सुधारकों की तस्वीर समाज विकास में छापिये। फिजूलखर्ची करने वाले परिवारों की निन्दा करनी चाहिए। यह व्यवसायियों की संस्था नहीं है। साहित्य व संस्कृति से भी समाज को जोड़िये। गत १५–२० वर्षों से समाज सुधार के प्रस्ताव पेश होते हैं–अमल नहीं होते। यथा राजा तथा प्रजा। ऊपर से इसकी शुरूआत हो। पदाधिकारी इसकी शुरूआत करें।

संविधान पर सुझाव

श्री विनोद अग्रवाल, झारखण्ड

सम्मेलन में महिलाओं को भी आरक्षण मिले। हम महिलाओं की आधी आबादी को छोड़ रहे हैं।

श्री महेश जालान (बिहार)

आवश्यकतानुसार विभिन्न जिलों में समिति तथा उपसमिति का गठन किया जाए, संविधान में यह संशोधन हो। सदस्यता फार्म में नगर और प्रान्त का भी उल्लेख हो। संविधान में संशोधन का अधिकार अखिल भारतीय समिति को हो।

श्री विनोद तोदी (बिहार)

एकल सदस्यता में २५ प्रतिशत का लेन–देन हो। प्रान्त के स्तर पर सदस्य बनाये जाते हैं तो केन्द्र २५ प्रतिशत लें। केन्द्र बनाये तो प्रान्त को २५ प्रतिशत दे।

श्री मुरली केडिया (झारखंड)

सदस्यता शुल्क ५० प्रतिशत केन्द्र रखे–५० प्रतिशत प्रांत रखे। प्रांत तय करे जिला, शाखा को क्या देना है। विशिष्ट सदस्य का सालाना शुल्क ५०० अधिक है। यह तय करें कि प्रान्त व केन्द्र का सदस्यता शुल्क एक हो। तत्काल प्रभाव से लागू करें।

मंगानियाजी

विशिष्ट सदस्यता शुल्क ५०० ठीक है।

श्री लोकनाथ डोकानिया

महिला मंच एवं युवा मंच से भी इस संबंध में बात करें।

श्री विश्वनाथ मारोठिया (उड़ीसा)

पति के साथ पत्नी की सदस्यता आरम्भ करें। इससे महिलाएं जुड़ेंगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलालजी रूँगटा ने प्रस्तावित किया कि सदस्यता का प्रस्ताव १ अप्रैल २००९ से लागू हो।

उपरोक्त चर्चा के उपरान्त सभी प्रस्ताव सर्वसम्मती से पारित किए गए। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्द लाल रूँगटा ने दोहरी सदस्यता प्रणाली की जगह एकल सदस्यता को अपनाने को सही बताया। ***उन्होंने कहा कि एकल सदस्यता का प्रस्ताव १ अप्रैल २००९ से लागू हो ताकि इस दौरान सभी प्रान्तीय ईकाइयाँ भी अपने संविधान में तदनरूप संशोधन कर लेवें।***

दिल्ली अधिवेशन में
देशभर से आये सम्मेलन के प्रतिनिधिगण

''कारवां बन चला..... पर झूम उठे लोग''

मारवाड़ियों का विकास

लड़कियों के बिना संभव नहीं

- संतोष बागड़ोदिया

२६ दिसंबर २००८ को रांची में 'कारवां-२००८' मायुमं नवम राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन के अवसर पर एक पत्रिका का विमोचन करते हुए केन्द्रीय कोयला राज्यमंत्री संतोष बागड़ोदिया साथ दे रहे हैं मायुमं अध्यक्ष श्री अनिल के. जाजोदिया व सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा और सम्पति मोढा

रांची : केन्द्रीय कोयला **राज्यमंत्री संतोष बागड़ोदिया** ने शुक्रवार को रांची में कहा कि लड़कियों के बिना मारवाड़ी समाज का विकास संभव नहीं है। विकास के दोनों पहिये (लड़के–लड़कियों) का साथ होना जरूरी है। तभी समाज का उत्तरोत्तर विकास होगा। उक्त बातें कारवां–०८ (अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का नवम् राष्ट्रीय अधिवेशन) के उद्घाटन अवसर को देश भर से जुटे मंच के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा। मंत्री ने कहा कि युवा मंच लड़कियों को आगे लायें। मारवाड़ी लड़कियाँ किसी से कम नहीं हैं। लड़कियों को भी अपना रोल मॉडल कल्पना चावला को बनाने की सलाह दी। उद्घाटन अवसर पर उद्योगपति व मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष नन्दलाल रूँगटा, मंच के राष्ट्रीय महामंत्री मनमोहन लोहिया सहित पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वश्री प्रमोद सराफ, अरुण बजाज, ओमप्रकाश अग्रवाल, पवन सिकारिया, प्रमोद साह, बलराम सुल्तानिया, काफी संख्या में सदस्य उपस्थित थे। संचालन आलोक भरतिया ने किया। इसके पूर्व उन्होंने मशाल प्रज्जवलित कर कारवां–०८ का उद्घाटन किया।

श्री जितेन्द्र कुमार गुप्ता

इसके एक दिन पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पद का चुनाव संपन्न हुआ जिसमें अंगुल उड़ीसा के **जितेन्द्र कुमार गुप्ता** को मायुमं का अगला राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन लिया गया। श्री गुप्ता अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी श्याम सुन्दर सोनी को ७० वोटों से पराजित कर अध्यक्ष पद पर काबिज हुए। वहीं रामगढ़ के गोविन्द मेवाड़, गोरखपुर के संजय संथालिया, भुवनेश्वर के अध्यक्ष कुमार खंडेलवाल, गुवाहाटी के ओमप्रकाश अग्रवाल व महाराष्ट्र के वीरेन्द्र धौक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुने गये हैं। इन सभी का कार्यकाल सत्र २००८–११ तक का होगा।

श्री नन्दकिशोर जालान को

समाज गौरव सम्मान दिया गया

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के नवम् राष्ट्रीय अधिवेशन के दूसरे दिन समाज गौरव सम्मान का राष्ट्रीय अलंकरण व सम्मान अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं युवा मंच के मार्गदर्शक नन्दकिशोर जालान को दिया गया। श्री जालान को यह सम्मेलन छत्तीसगढ़ के कैबिनेट मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने दिया। मौके पर श्री अग्रवाल ने कहा कि इस तरह का आयोजन हमेशा होना चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम की सराहना की और कहा कि कार्यक्रम में युवाओं की भूमिका देख कर गर्व होता है। युवा शक्ति ही राष्ट्र की शक्ति है। श्री अग्रवाल ने इनके अलावा भंवरमल सिंघी स्मृति शोध पुरस्कार निदेशिका गांधी संस्थान बनारस की कुसुमलता केडिया को, ईश्वर दास जालान स्मृति जनसेवा पुरस्कार कोलकाता के समाजसेवी पुष्कर लाल केडिया को, डॉ राममनोहर लोहिया स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार माणक (जोधपुर) के संस्थापक संपादक पद्म मेहता को और सेवा मित्र सम्मान शिक्षाविद् व विचारक रीना सैकिया को दिया।

अधिवेशन में श्री जालान जी ने अपनी अस्वस्थता के चलते जाने में असमर्थता व्यक्त की थी, इसलिये गत २२ जनवरी शाम ५.३० बजे अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल के.जाजोदिया, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा व निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामावतर पोद्दार, समाज विकास के सहयोगी संपादक श्री शम्भु चौधरी, श्री कैलाशपति तोदी, श्री दिलीप गोयनका, श्री मुकेश खेतान, व श्रीमती अनुराधा खेतान ने कोलकाता स्थित उनके निवास पर जाकर उक्त सम्मान उन्हें भेंट किया। इस अवसर श्री जालान जी के दीर्घायु होने की मंगल कामना भी की गई।

इस अवसर बिहार विधानसभा के विधान पार्षद सतीश कुमार को युवा मंच द्वारा पगड़ी पहना कर व शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री कुमार ने मारवाड़ी समाज की सोच को समाज के लिए सकारात्मक बताया। उन्होंने युवा मंच को बिहार में उद्योग, व्यापार लगाने का न्योता दिया। उन्होंने आगामी राष्ट्रीय सम्मेलन को भी पटना में करवाने का आग्रह किया। इस दौरान श्री कुमार के साथ मोतिहारी के जिला परिषद विनय कुशवाहा भी उपस्थित थे।

उद्घाटन अवसर पर संतोष बागड़ोदिया ने रांची में सफलतापूर्वक राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित करने के लिए मारवाड़ी युवा मंच रांची शाखा को पुरस्कृत किया। इनके अलावा फायर फाइटिंग प्रोजेक्ट के लिए तिनसुकिया शाखा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम सोनी, ट्रेडेक्स के राष्ट्रीय संजोयक कैलाश तोदी व रामशंकर रूँगटा को भी पुरस्कृत किया।

मारवाड़ी युवा मंच का राष्ट्रीय अधिवेशन "कारवां–२००८"

.....रंगीलो म्हारो ढोलना रे

कु० श्रेया राठी

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच द्वारा आयोजित कारवां–०८ में शुक्रवार को सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि रांची के विधायक सी.पी. सिंह थे। उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहे। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वन्दना से हुई। छत्तीसगढ़ से आयी दीपांजलि अग्रवाल ने .....रंगीलो म्हारो ढोलना रे गाने पर नृत्य कर उपस्थित लोगों को लुभाया। पूर्वोतर के रमेश दधीच द्वारा बेहतरीन नृत्य नाटिका का प्रदर्शन किया गया। इसके बाद .....पिया आओ सो मनडेरी बात गाने पर उत्कल की सरिता सोनी ने भी नृत्य प्रस्तुत किया। झारखण्ड की रंजीता पोद्दार एण्ड ग्रुप ने नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में किशन खंडेलवाल ने हास्य व्यंग्य कविता पाठ किया। निशा राठी ने ११ मटकी नृत्य का प्रदर्शन किया। प्रमिला शर्मा ने हास्य नाटिका का प्रदर्शन किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों मे रायपुर शाखा से ८ वर्षीय बालिका कु० श्रेया राठी ने ७ घड़े सर पर संतुलित कर परात, काँच एवं आग के साथ नृत्य प्रस्तुत किया जिसे उपस्थितों ने काफी सराहा साथ ही रायपुर शाखा के ही अमर बंसल ने दहेज प्रथा पर मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया।

फोटो प्रदर्शनी एवं ट्रेडेक्स

कारवाँ-०८ में झलक कारवां की..... नाम से फोटो प्रदर्शनी भी लगायी गई है। शुक्रवार को इसका उद्घाटन मंच के संस्थापक अध्यक्ष प्रमोद सराफ ने किया। वहीं इस बार श्री कैलाश तोदी की देख रेख में 'ट्रेडेक्स' व्यापार मेला भी लगाया गया था। फोटो प्रदर्शनी एवं ट्रेडेक्स को देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी।

पत्रिका विमोचन

इस अवसर पर युवा मंच की राष्ट्रीय पत्रिका मंचिका का विमोचन केन्द्रीय कोयला राज्यमंत्री संतोष बागड़ोदिया ने किया। इसके अलावा 'जागो मां जागो', 'संस्कार', 'रीति' सहित विभिन्न शाखाओं की पत्रिकाओं का भी विमोचन किया।

कारवां बन चला..... पर झूम उठे लोग

रांची : मारवाड़ी युवा मंच रांची शाखा के ***मनोज काबरा द्वारा रचित*** गीत कारवां बन चला, कारवां बढ़ चला.....

गीत के बोल पर सीताराम रूँगटा नगर में उपस्थित लोग खुद को थिरकने से न रोक सकें। यह गीत युवाओं में राष्ट्रीय जनचेतना के साथ–साथ देशभक्ति जगा गया। गीत के बोल के साथ नगर के कोने–कोने से युवक–युवतियाँ हाथ में कारवां के पताके लिए थिरकते रहे। उक्त गीत अधिवेशन गीत भी था जो इस प्रकार है।

कारवां बन चला, कारवां बढ़ चला
प्रगति की दिशा में, हमको है चलते जाना
लक्ष्य हमें हासिल करना, हमने है ये ठाना
कारवां.....

जागो जागो ओ युवा वीर, एक नया संदेश आया
जो जागत है, सो पावत है यही संदेश लाया
हम नहीं जमाने से, हमसे सारा जमाना
युवा शक्ति है राष्ट्र शक्ति, हमसे ना टकराना
कारवां.....

सभ्य समाज की कल्पना पर, हमेंहै चलते जाना
पश्चिमी रोग से युवा वर्ग को, अब है दूर भगाना
अपनी संस्कृति को साथी, नहीं है भूल जाना
एक से एक बनेंगे ग्यारह, नयी क्रान्ति है लाना
कारवां.....

अर्जुन जैसा शूरवीर बन, तुमको लक्ष्य है पाना
भामाशाह सी दानवीरता, को मिसाल बनाना
बन कर पृथ्वीराज, जयचंदों को मार भगाना
करो प्रतिज्ञा आज ही, राम राज्य है लाना
कारवां.....

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलनः

डॉ0 श्यामसुन्दर हरलालका

नये अध्यक्ष चुने गये

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन की प्रादेशिक कार्यकारिणी बैठक एवं प्रादेशिक सभा की बैठक नगवाँ में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। बैठक को सफल बनाने में उपस्थित सभासदों का योगदान सराहनीय रहा। सभा में आगामी सत्र वर्ष २००९ एवं २०१० हेतु गुवाहाटी के डॉ0 श्यामसुन्दर हरलालका को निर्विरोध नये अध्यक्ष के रूप में चुना गया। इसी सभा में श्री हरलालकाजी को पूर्व प्रादेशिक अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल ने औपचारिक रूप से अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। विदित रहे कि डॉ0 श्यामसुन्दर हरलालका को पूर्वोत्तर की अधिकतर शाखाओं का समर्थन प्राप्त था एवं सभा ने सर्वसम्मति से उन्हें अध्यक्ष चुना है।

गुवाहाटी उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ0 श्यामसुन्दर हरलालका विगत ४० वर्षों से सम्मेलन सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं। आप एक शिक्षाविद्, वक्ता, लेखक, चिंतक एवं कुशल संगठक हैं। आपने धुबड़ी शहर के महापौर, बैंबर के सभापति, कानून महाविद्यालय के प्राचार्य के रूप में भी अपनी सेवायें प्रदान की हैं। हाल ही में आपकी अंग्रेजी में 'बंगलादेशी इनमेसन' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका प्राक्कथन असम साहित्य सभा के सभापति ने लिखा है। इसके अलावा भी आपने अनगिनत लेख एवं किताबें लिखी हैं। हमें आशा है कि आपके नेतृत्व में मारवाड़ी सम्मेलन में आपका पिछला लम्बा अनुभव सम्मेलन को नई ऊँचाईयाँ प्रदान करेगा।

With Best Compliments From :-

PHOOLASHREE DEORAH SEVA KOSH

Charitable Trust Dedicated To Service

(Founder Trustee - Late S.L.Deorah)

✸✸✸

13E-Rajanigandha

25, Ballygunge Park, Kolkata-700 019

Phone : 2247-7138, 2240-1644

कविता - १

घर से बड़ा न कोई मन्दिर

- अक्षय जैन

जिस घर में मिट्टी मुलतानी, जिस घर में मटके का पानी।
जिस घर में तुलसी की पूजा, जिस घर में मीठा खरबूजा।
जिस घर में दादी के किस्से, उस घर के ना होवें हिस्से।
.....उस घर के ना होंवे हिस्से।।

घर से बड़ा न कोई मन्दिर, तीरथ ऐसा ना कोई दूजा।
जाप करो तुम लाख हजारों, घर से बड़ी न कोई पूजा।।
जिस घर में सुनने की आदत, जिस घर में सहने की ताकत।
जिस घर में नटवर का डेरा, जिस घर में पंछी का फेरा।
जिस घर में गीता–रामायण, उस घर बरसे नकद नारायण।
.....उस घर बरसे नकद नारायण।।

घर से बड़ा न कोई मन्दिर, तीरथ ऐसा ना कोई दूजा।।
जाप करो तुम लाख हजारों, घर से बड़ी न कोई पूजा।।
जिस घर में आटे की चक्की, जिस घर में ईंटें हों पक्की।
जिस घर में नारी का मान, जिस घर में पुरखों की शान।
जिस घर में सूरज की किरणें, उस घर में खुशियों के झरने।
.....उस घर में खुशियों के झरने।।

घर से बड़ा न कोई मन्दिर, तीरथ ऐसा ना कोई दूजा।
जाप करो तुम लाख हजारों, घर से बड़ी न कोई पूजा।।
जिस घर में मेहमानवाजी, जिस घर में काकी, काकाजी।
जिस घर में दलिए का शीरा, जिस घर में ठंढ़ा जलजीरा।
जिस घर में चंपा की डाली, उस घर की भई बातें निराली।
.....उस घर की भई बात निराली।।

घर से बड़ा न कोई मन्दिर, तीरथ ऐसा ना कोई दूजा।
जाप करो तुम लाख हजारों, घर से बड़ी न कोई पूजा।।
जिस घर में चाबी का छल्ला, जिस घर में बच्चों का हल्ला।
जिस घर में चूड़ी की खनखन, जिस घर में पायल की रुनझुन।
जिस घर में मैना कजरारी, उस घर की महिमा है न्यारी।
.....उस घर की महिमा है न्यारी।।

घर से बड़ा न कोई मन्दिर, तीरथ ऐसा ना कोई दूजा।
जाप करो तुम लाख हजारों, घर से बड़ी न कोई पूजा।।

:: सम्पर्क ::
'दाल-रोटी', 13, रहमन अपार्टमेंट,
उपासनी हॉस्पिटल के ऊपर,
एस. एल. रोड, मुलुंड (प.)
मुम्बई-४०००८०

कविता - २

बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना

- डॉ. अनन्तराम मिश्र 'अनन्त'

जहाँ दूरियाँ बहुत अधिक हों, मरे–जिये भी आ न सकूँ मैं।
किसी पथिक से, किसी दूत से हाल तुम्हारा पा न सकूँ मैं।
जहाँ तुम्हें अपने में गिरवी रखने पड़ें गेह के गहने।
बेदरदी समधी–समधिन के जहरीले ताने हों सहने।
ईंट–ईंट जिस घर की बापू ! तुम्हें देख बस दे उलाहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

नहीं जहाँ से सावन में आ पीहर, झूला झूल सकूँ मैं।
आ न सके राखी–रुचना पर भाई, राह निहार सकूँ मैं।
जहाँ न द्वारे गाय बँधी हो, जहाँ न तुलसी का चौरा हो।
हो न आरती ठाकुर जी की जहाँ न पूजित माँ गौरा हो।
जहाँ विदेशी रीति–रिवाजों को बेबस हो, हो निबाहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

जहाँ पथों पर भीड़ बहुत हो, तेज वाहनों का खतरा हो।
शुद्ध हवा–पानी दुर्लभ हो, स्नान–ध्यान में भी अतरा हो।
जहाँ नियम–संयम के मरु में पंगु बुद्धि, कुण्ठित विवेक हो।
जहाँ देव ही देव भरे हो, सुलभ नहीं इंसान एक हो।
ऐसे–स्वप्निल स्वर्गधाम की मेरे मन में नहीं चाहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

परम्पराएँ जहाँ दहेजी करें तुम्हारा दोहन रह–रह।
सास–ससुर की चढ़ें त्यौरियाँ, रहना पड़े गालियाँ सह–सह।
दिवस ढले अपने घर वापस जहाँ न जीवन साथी आये।
जहाँ न चबूतरे पर बरगद, पीपल या कि आम लहराये।
जहाँ न हो नदिया–अमराई, धुँआ–धुन्ध में हो कराहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

टी.वी., कार, फोन, बँगला हो, हो नौकर सुविधा अपार हो।
हृदयहीन हो किन्तु आदमी, कलह–क्लेश हो, दुराचार हो।
नहीं सहजता मिले किसी में जहाँ दिखे हर वक्त दिखावा।
जहाँ न लज्जा का गहना हो, हो नकल परस्त नग्न पहनावा।
जिस घर में रह मुझको निशि–दिन दुख–समुद्र ही पड़े थाहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

राष्ट्र, समाज, विश्व में ईश्वर–दर्शन का श्रद्धा–विचार हो।
अपनी संस्कृति पर आस्था हो, शान्ति–सुमति हो जहाँ प्यार हो।
जहाँ लोग लकड़ी वाले से शिष्ट–सुखद व्यवहार निभायें।
जहाँ नहीं पैसा दहेज में, वधू गुणवती माँगें–पायें।
जहाँ न दुनिया की मण्डी में जीवन–मूल्यों का बिसाहना।
बाबुल ! वहाँ न मुझे व्याहना।।

:: सम्पर्क ::
गोला गोकर्णनाथ, खीरी (उ.प्र.) २६२८०२
साभार : "सामाजिक चेतना काव्य मंजूषा"

धरोहर - 1

श्री माहेश्वरी विद्यालय, कोलकाता

लगभग ८५ वर्ष पूर्व की बात है। वे शताब्दी की तरुणाई के दिन थे। सामाजिक जागरण के लिये बहुमुखी रचनात्मक कार्यों को संपन्न करने के लिए यत्र तत्र ऐसे धरातल निर्मित किये जा रहे थे, जहां आत्मविश्वास जी सके, आस्था पनप सके और स्वप्न फल फूल सके। इस दिशा में प्रयास करने वाले लोगों में माहेश्वरी जाति के कर्मठ पुरुष भी थे। जागृति कीं इसी भावना से बंगाल में सन् १९१४ में माहेश्वरी सभा को प्रगति के नये आयाम देने का गुरुतर दायित्व रामकृष्णाजी मोहता ने ग्रहण किया। उनमें माहेश्वरी जाति को शिखर पर देखने की महत्वाकांक्षा थी। एक बैठक में जब पुस्तकालय विषयक विचार विमर्श चल रहा था, उन्होंने प्रसंगवश एक बात प्रभावशाली तरीके से कही कि पहले पढ़ना तो सीख लें। ये गिने चुने शब्द उनकी वाणी से जिस कटु सत्य को लेकर प्रकट हुए। उससे उपस्थित जनों को गहन चिन्तन का विषय मिला। यह सत्य नकारने योग्य नहीं था। शिक्षा के लिए चाहिए विद्यालय और विद्यालय के लिए चाहिए साधन स्थान सहयोग और अटूट संकल्प मोहताजी ने अपने विचारों को सबसे पहले सभा के कर्मठ कर्णधार जुगल किशोरीजी बिड़ला के सामने रखा। उन्होंने भी इसका समर्थन किया परिणाम स्वरूप २४ मार्च १९१६ ई को सभा की एक बैठक बुलाई गयी, जिसमें विद्यालय की स्थापना का संकल्प विधिवत् प्रस्ताव रूप में स्वीकृत किया गया।

५ मई १९१६ को इसी अक्षय तृतीया के दिन रामानुज संप्रदाय के आचार्य व कांजीवरम् के पीठाधीश्वर श्रीमद अनताचार्य जी महाराज ने अपराह्न एक बजे गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में जगद्गुरू ने श्री माहेश्वरी विद्यालय को अपने आशीषों से अभिसिक्त करके उसका उद्घाटन किया। अक्षय तृतीया की तिथि सर्वदा मंगलदायिनी और पवित्र मानी जाती रही है और इसी दिन विद्यालय का श्री गणेश उसके उज्जवल भविष्य का द्योतक था। मात्र पच्चीस छात्रों को लेकर विद्या दान की जो शुरूआत हुई थी, उसे ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या बढ़कर एक सौ पचास हो गयी। अब स्कूल को जमीन की जरूरत पड़ी समाज हितैषी सुखलाल करनानी ने इस समस्या के समाधान के लिए १८ हम्माम गली का मकान श्री माहेश्वरी विद्यालय को तब तक के लिए प्रदान किया, जब तक उसका निजी भवन न हो जाये, सं १९७४ वि. की अक्षय तृतीया को विद्यालय ने इस नये भवन में प्रवेश किया। अब समाज के कार्यकर्ताओं के मन में यह बात बैठ चुकी थी कि स्थान परिवर्तन करते रहने से असुविधाओं से मुक्ति पाना संभव नहीं है। इससे मुक्ति तभी मिलेगी जब विद्यालय का अपना भवन बन जायेगा। परिणामस्वरूप भवन की आवश्यकता तीव्रता से अनुभव की जाने लगी। १६ फरवरी १९१७ को माहेश्वरी सभा ने निश्चय किया कि विद्यालय के निजी भवन की समस्या अविलंब हल की जानी चाहिए। अंतत: सन् १९२१ ई में महानगर के बड़ाबाजार अंचल में ४, शोभाराम बैसाख स्ट्रीट का भवन खरीदने की प्रारंभिक योजना रामकृष्ण मोहता और विद्यालय के प्रथम सभापति जुगल किशोर बिड़ला ने मिलकर बनायी। २० अक्टूबर १९२३ को सभा भवन का न्यास संलेख (ट्रस्ट डीड) सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।

श्री माहेश्वरी विद्यालय का श्री गणेश प्राथमिक विद्यालय के रूप में किया गया था। शीघ्र ही वह मिडिल स्तर तक जा पहुंचा। और तीन वर्ष बाद ही उसने हाई स्कूल तक की कक्षाएं संचालित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर ली। १९१९ में कलकता विश्वविद्यालय द्वारा इसे हाईस्कूल की मान्यता प्रदान की गयी। राष्ट्रीयता की लहर देश के कोने कोने में दौड़ रही थी। विदेशी सता द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार करने की प्रेरणा प्रखर हो उठी थी। श्री माहेश्वरी विद्यालय ने १९२१ से लेकर १९२५ तक कलकता विश्वविद्यालय से अपना संबंध विच्छेद करके विशुद्ध राष्ट्रीय संस्था का रूप ले लिया। किन्तु विद्यालय के हित को ध्यान में रखते हुए फिर १८ फरवरी १९२६ को कलकता विश्वविद्यालय से पुन:हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त की गयी। अब स्थिति यह थी कि प्रतिवर्ष अनेक छात्रों को स्थानाभाव के कारण प्रवेश पाने से वंचित रहना पड़ता था। कार्यकर्तागण इस विषय में चिंतित थे। १९५० तक विद्यालय में उन्नीस सौ छात्र हो गये थे।

१९५० के बाद एक नया दौर प्रारंभ हुआ। हाई स्कूल की परिपाटी समाप्त करके माध्यमिक शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित किया जाने लगा। मुदालियर आयोग ने सिफारिश की कि इंटरमीडिएट शिक्षा समाप्त की जाये और उसे ऐंट्रेंस के साथ मिश्रित किया जाये एवं उसे उच्चतर माध्यमिक परीक्षा का नाम दिया जाये। परिणामस्वरूप जनवरी १९५५ में हिन्दी भाषी विद्यालयों में श्री माहेश्वरी विद्यालय को ही प्रथम बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय घोषित किया गया। यह निश्चय ही एक बड़ी उपलब्धि थी। विद्यालय की प्रबंध समिति ने सन् १९५७ ई में विज्ञान विभाग के लिए सामग्री खरीदी जिसमें बहुमूल्य उपकरण भी थे। इन विगत वर्षों में छात्रों की क्रमश: बढ़ती हुई संख्या पर नजर डालें तो विद्यालय की लोकप्रियता, उसकी उच्चस्तरीय शिक्षा और प्रगति का अनुमान लगाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। सन् १९१६ में मात्र पच्चीस छात्रों से शुरू होने वाली इस विद्यालय में पहली कक्षा से बारहवीं तक के लगभग पांच हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं एवं १२० शिक्षक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

श्री माहेश्वरी विद्यालय न केवल पश्चिम बंगाल के हिन्दी भाषी विद्यालयों के सर्वोच्च आदर्शों का अपितु माहेश्वरी समाज की आदर्श संस्था माहेश्वरी सभा, कोलकाता के भी सर्वोच्च आदर्श का सफल प्रतिनिधित्व करता है। माहेश्वरी समाज द्वारा प्रतिष्ठित इस विद्यालय की अपने स्थापना काल से ही ऐतिहासिक एवं विशिष्ट परंपराएं रही हैं, जो उत्तरोत्तर विकसित होकर निखरती गयी हैं।◆

– पुरुषोत्तम तिवारी

साभार : प्रभात खबर, १४ फरवरी २००१

धरोहर - २

मारवाड़ी अस्पताल 'वाराणसी'

- गौरी शंकर नेवर, संयुक्त मंत्री

आज से ९० वर्ष पूर्व सन् १९१६ में कोलकाता के कानोड़िया परिवार द्वारा मारवाड़ी अस्पताल का शिलान्यास व उद्घाटन तत्कालीन गर्वनर सर जेम्स वेस्टन ने १२ अगस्त १९१६ को किया गया। अस्पताल के लिए स्थान का चयन बड़ी दूरदर्शिता से काशी आने वाले पर्यटक एवं यात्रियों का मुख्य आकर्षण माँ गंगा का दर्शन एवं स्नान तथा बाबा भोलेनाथ का दर्शनपूजन को ध्यान में रख कर किया गया। काशी शहर में व्यस्तम चौराहे गदौलिया पर स्थित अस्पताल माँ गंगा व भोलेनाथ से पाँच मिनट की दूरी पर है। संस्थापकों की ऐसी मान्यता थी कि अगर मर्ज है तो उसका इलाज भी है। निदान विधि भिन्न हो सकती है। अत: ऐलोपैथी के साथ–साथ आयुर्वेद विभाग की स्थापना सन् १९२१ में की गई तत्पश्चात् १९३६ में होम्योपैथी विभाग की स्थापना की गई। मरीजों को शुद्ध एवं प्रमाणिक आयुर्वेदिक दवा प्राप्त हो इसके उद्देश्य से निर्माण शाला की स्थापना की गई। जिसमें योग्य वैद्यों की निगरानी में शत् प्रतिशत शुद्ध दवाओं का निर्माण होता है। अत: यहाँ मर्ज ठीक करने वाली तीनों विधाएँ उपलब्ध हैं।

अस्पताल में प्रात: दूध एवं बिस्कुट तथा दोपहर एवं शाम को पवित्रता से बना हुआ सुपाच्य गरम भोजन ही रोगियों को नि:शुल्क दिया जाता है और साथियों को मात्र १०/– रुपये में।

इस चिकित्सा संस्थान ने आजादी के पहले स्वंत्रता संग्राम सेनानियों की निर्भीकता से चिकित्सा सेवा की जबकि उनकी चिकित्सा करना अंग्रेजों की नजर में अपराध माना जाता था।

भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने १९६४ में अस्पताल के महिला एवं बाल चिकित्सा विभाग का उद्घाटन किया एवं विभिन्न अवसरों पर देश के शीर्ष नेतागण डॉ. सम्पूर्णनन्द, डॉ. रघुनाथ सिंह, श्री श्रीप्रकाश जी, श्री मोहन लाल सुखाड़िया, श्री दाऊदयाल खन्ना, श्री चन्द्रभान गुप्ता आदि ने अस्पताल में पधार कर इसके विकास में अमूल्य योगदान किया। पं. कमलापति त्रिपाठी जी का उपाध्यक्ष के रूप में अन्तिम सांस तक अस्पताल के उत्थान में पूरा मार्गदर्शन एवं योगदान मिला। सेवा क्षेत्र में नये आयामों को प्राप्त करते हुए अपनी लम्बी सेवा अवधि में अस्पताल काफी उतार–चढ़ाव देखा फलस्वरूप संस्थापकों ने अस्पताल में नया संचार प्रदान करने हेतु नये ट्रस्ट बोर्ड एवं प्रबन्ध समिति गठन किया गया।

श्री नन्दलाल जी टांटिया के सहयोग से आधुनिक यंत्रों से युक्त निदान केन्द्र की स्थापना की गई एवं नि:शुल्क चश्मों का वितरण प्रारम्भ किया गया।

वाराणसी के वरिष्ठ चिकित्सकों सुप्रसिद्ध न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. एस. के. पोद्दार, सुप्रसिद्ध चर्मरोग विशेषज्ञ डॉ. एस.सी. खन्ना, मधुमेह के सुप्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉ. जे.के.अग्रवाल ने सप्ताह में एक दिन अस्पताल में अपनी सेवाएं देना प्रारम्भ किया सौभाग्य से उ.प्र. सरकार के पूर्व अपर निदेशक डॉ. सिद्ध गोपाल योग्य सर्जन अस्पाताल के सी.एम.ओ. का पद प्रारम्भ किया। सेवा

धरोहर - २

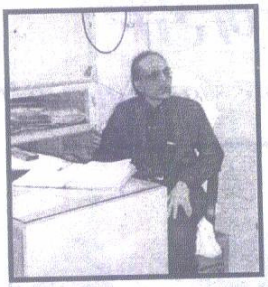

भाव से पूरे दिन अपना अनुभव व योगदान देते हुए **डॉ सिद्ध गोपाल** ने अस्पताल को काफी गरिमामय कर दिया। अब अनेकों आपरेशन नित्य होने लगे जो एक अच्छी उपलब्धि है। अस्पताल परिवार उनके इस सेवा व समर्पण को नमन करता है।

अस्पताल के आपरेशन थियेटर को आधुनिक बनाने हेतु पल्स आक्सी मीटर उपकरण सुलभ कराया गया। श्री नन्दलाल मातादीन सेवा ट्रस्ट के श्री मातादीन अग्रवाल ने स्व. नवनीत अग्रवाल की स्मृति में दन्त विभाग का पुनर्निर्माण कर आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया। परम् पूज्य बालव्यास पं. श्रीकान्त शर्मा जी की कृपा से उनकी कथा की बचत राशि चार लाख रुपये अस्पताल को मिले। जिससे कर नये केबिलों के माध्यम से वायरिंग ठीक कराई गई।

आयुर्वेद विभाग का भी नई मशीनों को लगाकर पुनर्निर्माण कराया गया ताकि औषधियों के निर्माण में सफाई एवं स्वच्छता का पालन हो सके। एक बड़े आपरेशन थियेटर का दो आपरेशन कक्ष बनाया गया तथा उसका पुनर्निर्माण कर उसे आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित किया गया एवं चार प्राईवेट कक्ष का भी निर्माण कराया गया। आयुर्वेद विभाग के विकास के लिए भी यह अस्पताल सदैव तत्पर रहा है और विभाग में आधुनिक मशीनों के माध्यम से निरन्तर उत्तम गुणवत्ता की दवाओं का उत्पादन अनुभवी वैद्यों के देखरेख में शास्त्रोक्त विधि से निर्माण कर आयुर्वेद विभाग के बहिरंग पटल पर नि:शुल्क वितरण की जाती है। आयुर्वेद एवं होम्योपैथी विभाग में ज्यादार मरीज साधारण परिवार के आते हैं जिनमें अधिकतर एलोपैथी दवा एवं जाँच वगैरह के पैसे खर्च करने में समर्थ नहीं होते हैं, अत: अस्पताल के प्रबन्धन ने सेवा बढ़ाने के उद्देश्य से पुर्जे की अवधी ७ दिन से बढ़कर १५ दिन कर दी ताकि उन दोनों मरीजों को एक पुर्जे पर १५ दिन तक नि:शुल्क दवा उपलब्ध होती रहे।

प्रबन्धक समिति की काफी वर्षों से एक नेत्र अस्पताल की स्थापना का स्वप्न अंतत: साकार हुआ। आज नेत्र ज्योति अस्पताल आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों से युक्त है जिसका उद्घाटन १३ नवम्बर २००५ को शंकराचार्य श्री श्री निश्चलानन्द जी सरस्वती एवं श्री चिन्मयानन्द जी सरस्वती के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। अस्पताल के ट्रस्टी द्वारा चिकित्सा एवं पदाधिकारी सप्ताह में ३–४ गांवों में जाकर नि:शुल्क मोतियाबिन्द कैम्प शिविर लगाकर मरीजों की जांच कर और उन्हें एम्बुलेन्स से अस्पताल में लाकर लेन्स प्रत्यारोपण द्वारा मोतियाबिन्द का ऑपरेशन कर उन्हें वापस उनके गांव तक छोड़कर आते हैं। आपरेशन के दौरान मरीजों को दोनों समय का सुपाच्य भोजन, बिस्कुट एवं दूध हमारे अपने श्रीराम अवतार जी अग्रवाल और श्री गोविन्द जी अग्रवाल (आसीयाना) द्वारा वर्ग भर उपलब्ध कराया जाता है तथा दवाईयाँ, चश्मा सभी पूर्णतया अस्पताल द्वारा नि:शुल्क दिया जाता है। जिसके कारण मरीजों पर आर्थिक भार नहीं पड़ता है। यूँ तो अस्पताल शुरू से ही गरीब असहाय, महात्माओं साधु व विद्यार्थियों की सेवा में तत्पर रहा है किन्तु कहावत है :–

तुलसी जग में दो बड़े, एक पैसा एक राम।
राम नाम से मुक्ति मिले, पैसे से सब काम।।

कोई भी व्यक्ति धनाभाव के कारण इलाज न करा सके इसको ध्यान में रखकर ट्रस्टी एवं प्रबन्ध समिति द्वारा असहाय सहायता कोष बनाने का निर्णय लिया और इस उद्देश्य की पूर्ति को साकार रूप देने के लिए भाई सुमन कुमार सिंधी आगे बढ़ते हुए इस मद में होने वाले समस्त खर्च को वहन करने की स्वीकृति दी और विगत दो वर्षों से इस मद में हुए समस्त धनराशी उनके द्वारा प्राप्त हो रही है इसके लिए अस्पताल परिवार उनका आभारी है।

नेत्र चिकित्सालय को विश्वविख्यात आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित कराया गया ताकि नेत्र रोगियों को इलाज हेतु वाराणसी से बाहर न जाना पड़े। नेत्र रोगियों के लिए २० बेंड की व्यवस्था की गई है। साथ ही सम्पन्न नेत्र रोगियों के लिए वातानुकूलित डीलक्स कमरों का भी निर्माण कराया गया है।

हमारी योजना हम इस अस्पताल को एक आदर्श चिकित्सालय के रूप में विकसित करना चाहते हैं जहाँ पर सभी रोगियों की सेवा भाव से चिकित्सा हो सके। गरीबों एवं असहायों को पूर्ण चिकित्सा सुविधा नि:शुल्क प्रदान करना चाहते हैं। प्रत्येक विभाग को अत्याधुनिक मशीनों से युक्त करने का इरादा हैं।

अस्पताल के दैनिक कार्यकलापों और संचालन में कर रहे मेरे सहयोगी श्री बजरंगलाल पंसारी,श्री गोविन्द जी अग्रवाल, श्री राम नारायण बहल, श्री रामअवतार जी अग्रवाल, श्री दीनानाथ जी झुनझुनवाला, कृष्ण कुमार जाजोदिया, दीपक जी नवलगढ़िया, श्री कमल गोयनका, श्री संजय खन्ना के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनकी वजह से इतना जटिल कार्य सुगमता से संचालित हो रहा है और अस्पताल अपनी पुरानी ख्याति और गरिमा प्राप्त करते हुए नित्य नये आयाम को प्राप्त कर रहा है।

हमारे प्रेरणा श्रोत, मार्गदर्शक श्री मातादीन अग्रवाल जिनके हृदय में अस्पताल विराजमान था हमारे बीच नहीं रहे। अस्पताल परिवार इसे अपूर्णनीय क्षति मानता है। अस्पताल में तीव्र गति से हुए उत्थान में उनका योगदान स्मरणीय है उन्होंने हमेशा अस्पताल की तरक्की का सपना देखा और उनके लिए हमें प्रेरित किया।

अस्पताल प्रबन्धन व सभी कर्मचारियों का सदैव यही ध्येय रहता है कि रोगी की सेवा भगवान की सेवा है। इसी मूलमंत्र को दृष्टिगत रखते हुए आज अस्पताल की सेवाओं ने एक नयी पहचान बनाई है।◆

धरोहर - 3

गुवाहाटी गोशाला असम की ऐतिहासिक धरोहर

- रामनिरंजन गोयनका

सनातन धर्म के शास्त्रीय विधानों में सर्वत्र गाय का प्रथम स्थान है। रामचन्द्र के पूर्वज राजा दिलीप को वंशावरोध का संकट आ पड़ा था। राजा दिलीप ने गुरु वशिष्ठजी के बताये नियमानुसार गाय की सेवा की। सेवा से प्रसन्न हुई नन्दिनी से वर प्राप्त किया, फलस्वरूप रघु नामक बालक प्राप्त हुआ। रघु के कारण ही सूर्यवंश 'रघुवंश' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

गाय की महत्ता, उसकी सेवा से प्राप्त आशीर्वाद जीवन को सुखमय बनाते हैं। इन्ही सब बातों से प्रेरणा लेकर श्री गुवाहाटी गोशाला की स्थापना हुई थी। आज श्री गुवाहाटी गोशाला भारत की ऐतिहासिक गोशालाओं में आज भी सर्वोपरि है। गोशाला के वर्तमान मंत्री श्री जयप्रकाश गोयनका के अनुसार सन् १९१६ में स्थापित गुवाहाटी पिंजरापोल (वर्तमान में गुवाहाटी गोशाला) की स्थापना के लिये सबसे पहले यहाँ का अग्रवाल समाज आगे आया। भूमिदाताओं में सर्वश्री हुकमीचन्दजी, रामरिखदासजी अजितसरिया (गुवाहाटी), लालचन्दजी कन्हीरामजी चौधरी (कोलकात), रामलालजी लालचन्दजी गोयनका (गुवाहाटी), हुकमीचन्दजी बशेशरलाल अजितसरिया (गुवाहाटी) प्रमुख थे। उपरोक्त कोलकाता वाले चौधरियों ने मालीगाँव गोशाला की जमीन दी थी यह जानकारी मुझे श्री पुरुषोत्तमजी अजितसरिया से प्राप्त हुई। गोशाला को इसके स्थापना–काल से वर्तमान रूप तक पहुँचाने वालों में उपलब्ध नाम इस प्रकार हैं– स्व. श्री नागरमलजी केजड़ीवाल, रामचन्द्र शिवदत्तराय धानुका, ओंकारमलजी गोयनका, रामनारायणजी, केशरदेवजी बावरी, बद्रीनारायणजी मोर, पंडित मुरलीधरजी शर्मा, केदारमलजी ब्राह्मण (इनकम टेक्स का काम देखते थे), रामकुमारजी सरावगी, देवीदत्तजी सांगानेरिया, कुन्दनमलजी अजितसरिया, गणपतरायजी धानुका, राधाकृष्णजी सिवोटिया, रूपचन्दजी पोद्दार, श्यामसुन्दरजी गोयनका, शंकरप्रसादजी शर्मा, प्रभुदयालजी देवड़ा, देवीप्रसादजी धानुका, ओंकारमलजी लोहिया तथा अन्य हैं। गुवाहाटी गोशाला का वर्तमान स्वरूप, इसकी गोधन संख्या, गोपालन व्यवस्था, चारे तथा दानाखाद्य की प्रस्तुति से लेकर परिवेशन तक की आधुनिक व्यवस्था, गोपालकों की आवास व्यवस्था तथा स्थायी कार्यालय कर्मचारी आदि की आवास – भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था तथा गौशाला का भव्य विशाल परिसर देखकर आनेवाले दर्शक, सन्त महात्मा, समाजसेवी तथा राजनेता तक अभिभूत होकर प्रशंसा करते हैं कि यह भारत की एक ऐतिहासिक अद्वितीय आदर्श गोशाला है। एक महान सन्त ने तो **Visit Book** में यहाँ तक लिख दिया है कि मैंने नन्दबाबा की गोशाला तो नहीं देखी परन्तु गुवाहाटी गोशाला परिदर्शन कर मैं नन्दबाबा की गोशाला की कल्पना कर सकता हूँ। जयप्रकाश गोयनका के महामन्त्रीत्व काल में सूचना के दौर में अब तो गोशाला हाईटेक हो गई है। गोशाला के कम्प्यूटर रूप में गोशाला की अधिकारिक वेबसाईट प्रारम्भ हो गई है। गोशाला, अब आधुनिक तकनीक का उपयोग कर रही है। इस वर्ष कोलकाता से आये कलाकारों द्वारा नृत्यनाटिका और रासलीला का आयोजन हो रहा है।

श्री गुवाहाटी गोशाला के पीछे सबसे बड़ा अवदान तो उन अग्रवाल भूमि दाताओं का है जिन्होंने इस आदर्श (पिंजरापोल) गोशाला की स्थापना का स्वप्न संजोया था। वे महाराजा अग्रसेन की महान सन्तान थे जिन्होंने केवल अग्रवाल समाज के लिये नहीं परन्तु व्यक्ति से ऊपर उठकर समष्टि समाज के लिये इस संस्था की स्थापना की। वे अग्रज धन्य हैं। इस गोशाला की स्थापना तथा तबसे लेकर आजतक इसके संचालन में भी अग्रबन्धुओं ने ही तन–मन–धन से इसकी सेवा की है तथा संकीर्ण सामाजिक परिधियों से ऊपर उठकर इस गोशाला को इस मुकाम तक पहुँचाया है। जहाँ इतनी बड़ी भूसम्पत्ति, गोशाला की इतनी जमीनें होंगी वहाँ इस भूमि के संरक्षण सम्बन्धी अनेक दखलदारी, बाधाएँ, विवाद, सरकारी–बेसरकारी संकट भी आते रहे हैं। मेरी जानकारी में इन कार्यों में श्रीश्यामसुन्दरजी गोयनका के सभापतित्व काल में श्री जयप्रकाश गोयनका ने गोशाला की सम्पत्ति को लेकर अनेक समस्याओं को सुलझाया तथा स्वयं समय देकर भागदौड़ कर गोशाला को सेवायें दी हैं। गोशाला के पूर्व अध्यक्ष श्री श्यामसुन्दरजी गोयनका के बाद में अध्यक्ष श्री लोकनाथ मोर और मन्त्री श्री रामपालजी सीकरिया की टीम ने भी गोशाला की प्रगति में उत्तम सेवायें दी हैं। अनेक दानदाताओं ने गायों के लिये गुवाली घर तथा अन्य निर्माण कराये हैं। इसका लेखा–जोखा गोशाला की वार्षिक स्मारिका **(Report)** में दर्ज रहता है। गोशाला में प्रतिवर्ष कार्तिक शुक्ल–अष्टमी (गोपाष्टमी) पर यहाँ भव्य मेला लगता है। नयनाभिराम बिजली की सजावट, विभिन्न स्वादिष्ट भोग्य सामग्रियों के स्टाल तथा गो प्रदर्शनी, गोमूत्रचिकित्सा औषधि केन्द्र, गोशाला का निजी गो चिकित्सालय की प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन आदि मेले में होते हैं।

इस गोशाला में कुल छोटे–बड़े बछड़े, गायें, सांड आदि मिलाकर १३६० गो वंश हैं। ३०० गऊएँ बीमार अपंग तथा वृहत गो वंशों की मालीगाँव गोशाला में गोशाला के निजी डाक्टर, तीन कम्पाउन्डरों द्वारा चिकित्सा सेवा भी की जाती है। गोशाला में दुधारु गायों द्वारा १३०० लीटर दूध उत्पादन होता है जो १/२–१/२ लीटर के कूपनो द्वारा छोटे छोटे परिवारों में उचित मूल्य पर वितरित किया जाता है।

गोशाला की निजी **Water supply** तथा पावरफुल जेनेरेटिंग रूम है तथा खेड़–घास आदि लाने के लिये, गोबर ढोने के लिये निजी ट्रकें ट्रेक्टर, टेलर गाड़ियाँ आदि हैं। यह सब पूर्ण व्यवस्थित रूप से कमेटि द्वारा संचालित होता है।◆

धरोहर - ४

कोयलांचल में बालिकाओं के लिए C.B.S.E. से मान्यता प्राप्त एकमात्र शिक्षण संस्थान : बेहतर सफलता के पायदान की ओर अग्रसर

बालिका विद्या मन्दिर, झरिया

संक्षिप्त परिचय व प्रगति प्रतिवेदन

बालिका विद्या मंदिर झरिया के इतिहास में श्रीमती काशीबाई पढ़ियार का नाम चिरस्मरणीय रहेगा। इनके द्वारा प्रदत्त जमीन पर इस संस्था का भव्य भवन सर ऊँचा किये खड़ा है। छठे दशक के प्रारंभ में झरिया की श्रीमती काशीबाई ने अपने स्वर्गीय पति रतिलाल नानजी पढ़ियार की पुण्य स्मृति में नारी शिक्षा हेतु दस कट्ठा जमीन लोक शिक्षा समाज को प्रदान की। लोक शिक्षा समाज ने स्थानीय दानी–मानी सज्जनों के आर्थिक सहयोग से इस भूमि पर एक भव्य तिमंजिले भवन का निर्माण पूर्ण कराकर मारवाड़ी सम्मेलन, झरिया को सौंप दिया। मारवाड़ी सम्मेलन ने इस भवन में दिनांक १.१.१९६१ से बालिका विद्या मन्दिर का संचालन प्रारंभ किया। कालक्रम से विद्यालय की लोकप्रियता के साथ–साथ छात्राओं की संख्या बढ़ती गई, जिसके कारण उक्त विद्यालय भवन में सुचारू रूप से अध्यापन और पाठ्येत्तर कार्यक्रमों के संचालन में स्थानाभाव की समस्या खलने लगी। इसके चलते विकास की गति में बाधा उत्पन्न होने लगी। स्थानाभाव के कारण ही विद्या मंदिर में अध्यापन का कार्य दो पालियों में सम्पादित कराया जाता था। प्रात: पाली में प्राथमिक विभाग की कक्षाओं के साथ–साथ, महिला महाविद्यालय की कक्षाएं भी उक्त पुराने भवन में एक ही समय चलने के कारणछात्राओं को अत्यधिक कठिनाईयों का सामना तो करना पड़ता ही था, इसके अलावा पढ़ाई भी बाधित होती थी, जिसके कारण उन्हें मानसिक रूप से भी प्रताड़ित होना पड़ रहा था। विद्यालय की छात्राओं को पूरे समय कक्षाओं के अन्दर ही बिताना पड़ता था, जबकि महाविद्यालय की छात्राओं को कई–कई घंटों तक लगातार कक्षा के बाहर बिताना पड़ता था। खाली समय में छात्राओं के बैठाने के लिए इस भवन में कोई अतिरिक्त कमरा अथवा खाली स्थान उपलब्ध नहीं था। अत: ये सभी छात्राएं यत्र– तत्र बरामदों की सीढ़ियों में झुन्ड बनाये खड़ी रहती थी। इनके शोरगुल के कारण प्राथमिक विभाग की कक्षाओं की पढ़ाई बाधित हो रही थी। श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा दिनांक २४.१.१९९५ को सर्वप्रथम विद्यालय का कार्यभार ग्रहण किये जाने पर विद्यालय की समस्त शिक्षिकाओं ने एक स्वर से उक्त नई समिति को विद्यालय भवन में स्थानाभाव के कारण उत्पन्न इन सभी प्रकार की समस्याओं से विस्तार पूर्वक अवगत कराया। तत्काल नई समिति ने यथाशीघ्र स्थायी रूप से स्थानाभाव की इस समस्या का समाधान कर लिये जाने का निर्णय लेते हुए यथाशीघ्र महिला महाविद्यालय का अन्यत्र स्थानान्तरण किये जाने तथा C.B.S.E. दिल्ली से मान्यता संबंधी शर्तों के अनुकूल सभी प्रकार की सुविधाओं से परिपूर्ण एक नये मध्य भवन का निर्माण कराने का निर्णय लिया। चूंकि विद्यालय का उक्त पुराना भवन C.B.S.E. के मापदण्ड के अनुकूल नहीं था। इसी क्रम में मारवाड़ी सम्मेलन, झरिया से उक्त महिला महाविद्यालय को लाल बाजार, झरिया स्थित नये भवन में स्थानान्तरण कराने की पूर्ण जिम्मेवारी लेते हुए, विद्यालय समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल के द्वारा उक्त नये भवन में पानी बिजली का नया कनेक्शन तथा अन्य सारी आवश्यक सुविधाओं को पूरा कराते हुए दिनांक १६.११.१९९५ को उक्त महिला महाविद्यालय का स्थानान्तरण नये भवन में करा दिया गया। तदोपरान्त विद्यालय समिति द्वारा श्री जीवनदास आर्या से सम्मेलन द्वारा खरीदी गई जमीन तथा मातृ सदन मार्केट के पीछे खाली पड़ी जमीन सम्मेलन एवं मातृ सदन के सौजन्य से प्राप्त कर उक्त नये भूखण्ड पर एक नये भव्य भवन का निर्माण पूर्ण कराये जाने का दृढ़ संकल्प लिया तथा उक्त नये भव्य भवन के निर्माणार्थ दिनांक ११.५.१९९५ को उक्त नये भूखण्ड पर भूमि पूजन एवं शिलान्यास का कार्यक्रम तत्कालीन एवं वर्तमान सम्मेलन अध्यक्ष श्री संतोष कुमार अग्रवाल (अधिवक्ता) के कर कमलों द्वारा तथा दिनांक १.५.१९९७ को इस भव्य तिमंजिले भवन में सभी प्रकार के आवश्यक उपक्रमों को पूरा कराते हुए इस नये भवन का उद्घाटन प्रसिद्ध समाजसेवी, उद्योगपति, सम्मेलन व विद्यालय के संस्थापक तथा मार्गदर्शक चिरस्मरणीय स्वर्गीय मदन लाल जी अग्रवाल के कर कमलों द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस नये भवन के परिसर में खेल का मैदान और स्थायी रंगमंच भी है। सम्प्रति बालिका विद्या मन्दिर के पुराने भवन में प्राथमिक विभाग और नये भवन में माध्यमिक विभाग की कक्षाएं चलती है। नये भवन परिसर में मैदान होने के कारण इसका उपयोग दोनों भवनों के छात्र छात्रओं द्वारा खेल कूद के लिए किया जाता है। वर्ष १९९८ से इस नये भवन में प्रथम से दशम् तक की शिक्षा हिन्दी माध्यम से तथा पुराने भवन में K.G.1 से पंचम् तक की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से प्रारंभ की गयी थी, किन्तु अभिभावकों एवं छात्र–छात्राओं का अंग्रेजी के प्रति विशेष रूझान को देखते हुए सत्र २००४–२००५ से C.B.S.E. से मान्यता प्राप्त अन्य विद्यालयों की भांति ही पुराने भवन में नर्सरी से पंचम् तक तथा नये भवन में षष्ठ से दशम् तक की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से दिये जाने की व्यवस्था प्रारंभ की गयी है। कोयलांचल में केवल बालिकाओं के लिए C.B.S.E. से मान्यता प्राप्त एक यही विद्यालय है।

दिनांक ७.२.२००२ को विद्यालय से सटी तीन कट्ठा जमीन श्रीमती तारा देवी पत्नी स्व० श्रवण अग्रवाल से खरीद कर विद्यालय के चाहरदिवारी के भीतर लिया गया। आज उक्त जमीन पर सुन्दर एवं आकर्षक बगीचा बना हुआ है। जिसके चारों ओर तरह–तरह के फूल, पौधे एवं गमले गलाए गये हैं। विगत कई वर्षों से प्रत्येक वर्ष १५ अगस्त एवं २६ जनवरी के समारोह के अवसर पर उक्त जमीन पर ही झण्डोत्तलन का कार्यक्रम संपादित कराया जाता है।

विद्या भारती से सम्बद्धता

शिक्षा का उद्धेश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। अपनी अस्मिता की रक्षा भी सर्वांगीण विकास में अर्न्तनिहीत है। विद्या भारती जो एक अखिल भारतीय गैर सरकारी शिक्षा संस्थान है, छात्र छात्राओं को किताबी ज्ञान के साथ–साथ अपनी संस्कृति, अपनी राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान को समझाने की दृष्टि देती है। उसके संरक्षण के लिए उत्सर्ग की भावना जागृत करती है। ऐसे शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध होना बालिका विद्या मन्दिर के लिए गौरवमय महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विद्या भारती से संबंधित विद्या विकास समिति, झारखण्ड से सम्बद्धता के उपरान्त विद्यालय के छात्र छात्राओं तथा शिक्षक शिक्षिकाओं का बहुमुखी विकास हुआ है। विद्या विकास समिति से सम्बद्ध होने के कारण इस विद्यालय की छात्राओंको राज्य, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर की भिन्न–भिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।◆

धरोहर - ५

शिक्षा के क्षेत्र में मारवाड़ी सम्मेलन, झरिया के बढ़ते कदम

महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज, झरिया

विगत कई वर्षों से दशम् उत्तीर्ण छात्राओं एवं इनके अभिभावकों के समक्ष एकादश में नामांकन की समस्या दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट द्वारा संचालित महिला महाविद्यालय की स्थापना के उपरान्त बालिकाओं एवं इनके अभिभावकों को बहुत बड़ी राहत मिली। इस विद्यालय में एकादश (इन्टर) से स्नातक तक केवल दो संकायों (वाणिज्य एवं कला) में ही एकमात्र छात्राओं के लिए ही शिक्षा की व्यवस्था है। विगत कई वर्षों से इस महाविद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं को अन्य कॉलेजों से परीक्षा का फार्म भराये जाने के कारण तरह तरह की परेशानी हो रही थी। चूंकि इस महाविद्यालय की प्रबंध समिति द्वारा किसी बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त करने की दिशा में कोई ठोस पहल नहीं की जा रही थी। किन्तु छात्रों के समक्ष इस प्रकार की शिक्षण संस्था का अभाव काफी खल रहा था, जहाँ महिला महाविद्यालय की भांति ही अन्य कोई दूसरा शिक्षण संस्थान विकल्प के रूप में हो, जहां छात्र भी दशम् उत्तीर्णता के पश्चात छात्राओं की भांति ही एकादश में अपना नामांकन करा सकें। इन सारे बिन्दुओं पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट कार्यसमिति के सदस्य सह बालिका मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल द्वारा इस अहम मुद्दे को सम्मेलन कार्य समिति की बैठक में उठाते हुए अपने इस ट्रस्ट के अन्तर्गत यथाशीघ्र एक ऐसे शिक्षण संस्थान की स्थापना पर जोर दिया जहां छात्र–छात्राओं को एकादश में नामांकन कराने में किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े तथा उक्त शिक्षण संस्थान में तीनों संकायों (वाणिज्य, कला एवं विज्ञान) की पढ़ाई की समुचित व्यवस्था हो। यह शिक्षण संस्थान कम से कम झारखण्ड एकेडमिक कौंसिल से मान्यता प्राप्त हो, ताकि छात्र–छात्राओं को अन्य विद्यालयों के माध्यम से परीक्षा फार्म भरने के कारण अनावश्यक परेशानी एवं फिजूलखर्ची से राहत मिले। सम्मेलन कार्यसमिति की उक्त बैठक में श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल द्वारा उठाये गये इस मुद्दे का बैठक में उपस्थित तमाम बन्धुओं ने समर्थन करते हुए इसकी पूर्ण जिम्मेदारी बालिका विद्या मंदिर समिति को सौंपी। सम्मेलन कार्यसमिति द्वारा जिम्मेदारी सौंपे जाने पर इस दिशा में तत्काल द्रुत गति से कार्रवाई करते हुए विद्यालय प्रबंध समिति ने १४.१२.२००४ को झारखण्ड एकेडमिक कौंसिल, रांची से महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज के नाम से मान्यता प्राप्त करने की दिशा में आवश्यक प्रक्रियायें पूर्ण कर लेने के पश्चात उक्त कौंसिल कार्यालय रांची में आवेदन समर्पित कर दिया। इस दिशा में विद्यालय समिति के अथक प्रयास एवं निष्ठा के कारण ही झारखण्ड एकेडमिक कौंसिल, रांची के पत्रांक – **JAC-1464/05** दिनांक १७.३.२००५ के आलोक में शिक्षा सत्र २००५– २००७ के लिए तीनों संकायों (वाणिज्य, कला एवं विज्ञान) में महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज के नाम से कक्षा स्थापना की अनुमति प्रदान की गयी। तदोपरान्त, विद्यालय के पुराने भवन के तीन एवं चार मंजिल पर इन्टर कॉलेज प्रारंभ करने की पूर्ण व्यवस्था करते हुए इस दिशा में कार्रवाई को आगे बढ़ते हुए तत्काल तीनों संकायों में कुल २६ छात्र–छात्राओं द्वारा एकादश में नामांकन करने के उपरान्त योग्य एवं कर्मठ अंशकालिक व्याख्याताओं एवं एक पूर्णकालिक लेखापाल सह कार्यालय प्रभारी की नियुक्ति की गई। तत्पश्चात दिनांक २१ जुलाई २००५ से एकादश की कक्षाओं का शुभारंभ किया गया। विद्यालय के तीसरे मंजिल पर प्राचार्य कक्ष, कार्यालय कक्ष, व्याख्याता कक्ष, कॉमन रूम इत्यादि की व्यवस्था की गई। चौथे मंजिल पर तीन अलग–अलग कमरों में वाणिज्य कला एवं विज्ञान की पढ़ाई की व्यवस्था को मूर्त रूप दिया गया।

इन्टर कॉलेज के वर्तमान सत्र के एकादश के छात्रों द्वारा एकादश उत्तीर्ण कर लेने के उपरान्त द्वादश में नामांकन करा लेने से वर्ष २००६ अप्रैल से द्वादश की कक्षा भी प्रारंभ कर दी गई। इस वर्ष एकादश के तीनों संकायों में कुल ३७ नये छात्र छात्राओं द्वारा नामांकन कराया गया है। इस इन्टर कॉलेज में झारखण्ड एकेडमिक कौंसिल रांची के द्वारा **C.B.S.E.** पैटर्न पर निर्धारित पाठ्यक्रम एवं **C.B.S.E.** से संबंधित विद्यालयों के समकक्ष छात्र–छात्राओं के लिए एक ही समय प्रातः ९ बजे से अपराहन् ३ बजे तक पढ़ाई की उचित व्यवस्था की गई है। छात्र–छात्राओं के लिए वेष भी निर्धारित है। दूर–दराज के क्षेत्रों से अध्ययन हेतु आने जाने वाले छात्र–छात्राओं के लिए वाहनों की निजी व्यवस्था की गई है। महाविद्यालय में निरन्तर पढ़ाई जारी रखने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय एवं एकेडमिक कौंसिल रांची से संबंधित महाविद्यालय के लिए लंबे समय तक के लिए दिये जाने वाले अवकाशों में कटौती करते हुए **C.B.S.E.** से संबंधित विद्यालयों के समकक्ष पूरे वर्ष भर में ग्रीष्मावकाश सहित कुल ५८ दिनों का ही अवकाश निर्धारित है। आवश्यकतानुसार अवकाश के दिनों में भी कक्षाएँ चलायें जाने की योजना है। इस महाविद्यालय की स्थापना से झरिया मारवाड़ी सम्मेलन ट्रस्ट के इतिहास में एक नई लोकप्रिय शिक्षण संस्थान का नाम जुड़ जाने से सामाजिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में सम्मेलन की बढ़ती हुई लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है। यह समाज एवं सम्मेलन के लिए गौरव की बात है। इस कॉलेज के प्रारंभ किये जाने में कोलफिल्ड कॉलेज भाग के प्रोफेसर माननीय पी० के० गजरे का अहम योगदान रहा है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। प्रारंभ से ही इनका कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन इस कॉलेज को प्राप्त होता रहा है। (कतिपय निजी व्यस्तता के कारण माह नवम्बर २००५ के बाद से कॉलेज परिवार इनके कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन से वंचित हैं।) बिना किसी प्रकार के स्वार्थ एवं पारिश्रमिक के इन्होंने कॉलेज में निरन्तर काफी समय तक लगातार उपस्थित रहकर प्रबंध समिति को हर प्रकार की चिन्ता से मुक्त रखा। इसके लिए हम सदैव इनके आभारी रहेंगे।◆

देश के निर्माण में मारवाड़ी समाज की भूमिका

-लोकनाथ डोकानिया
पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल

देश के निर्माण में मारवाड़ी समाज की अद्वितीय भूमिका रही है। चाहे वह उद्योग धंधे के लिए हो या साहित्य व सांस्कृतिक विकास में अथवा शिक्षा प्रसार में। अपनी कर्मठता कर्तव्य निष्ठा या बलिदान के लिए इस समाज के लोग हमेशा जाने जाते हैं। स्वाभिमान व स्वावलंबन की भावना के कारण कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। भारतवर्ष के स्वतंत्रता संग्राम में मारवाड़ियों की अहम् भूमिका रही। १९८६ के हीरक जयन्ती के मौके पर तत्कालिन राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा ने कहा था कि ***"यदि महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में मारवाड़ी समाज को अलग कर दिया जाय तो ९० फीसदी आन्दोलन स्वतः समाप्त हो जाता है।"*** यह पंक्तियां इस बात का प्रमाण है कि मारवाड़ियों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में कितना महत्वपूर्ण योगदान किया। आप जितना भी धन कमाना चाहें आपको कमाने का अधिकार है लेकिन इसे इच्छानुसार खर्च करने का अधिकार नहीं है। एक अच्छे जीवन की आवश्यकता की पूर्ति के बाद जोधन बचता है वह समुदाय का होता है। मुझे इस समय असम के ज्योति प्र० अग्रवाल का ध्यान आ रहा है जिन्होंने राजस्थान से जाकर असम के साहित्य, संस्कृति रंगमंच तथा संगीत में अपना ऐतिहासिक योगदान कर मारवाड़ी समाज का नाम किया। मारवाड़ी समाज के निम्न श्रेणी के लोगों के लिये शिक्षा का काम किया है। मारवाड़ी समाज के लोगों ने देश के हर कोने में जाकर समाज एवं देश को आगे बढ़ाया है। आज हिन्दुस्तान में १५ करोड़ मारवाड़ी रहते हैं जिसमें अग्रवाल, ब्राह्मण, जैन, ओसवाल एवं हरियाणा के सभी लोग आते हैं।

हमारे समाज के वरिष्ठ लोगों, जैसे नन्दलाल बोहरा एवं बाबूलाल बोहरा ने लड़के एवं लड़कियों के लिए छात्रावास बनाकर समाज में नाम किया। ऐसे ही कुछ लोग समाज के लिये होस्टल धर्मशाला पिंजरापोल को बनाकर कार्य कर रहे हैं। जेल की यात्रा करने में मारवाड़ी महिलाएँ भी पीछे नहीं रही। भारत छोड़ो आन्दोलन के द्वारा कुसुमलता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जानकी देवी बजाज, इन्दुमती गोयनका, कमला देवी, सरस्वती गाड़ोदिया जैसे अनेक नाम हैं। देश के स्वतंत्रता आन्दोलन स्त्रियों के अलावा पुरुषों में व बिड़लाजी, जमुनालाल बजाज, राममनोहर लोहिया का नाम आता है।

कोलकाता मारवाड़ी समाज के लिये महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस महानगर ने जहां मारवाड़ी समाज के व्यापारियों को समृद्धि दी वहीं उनमें सामाजिक चेतना का बीज बोया। इसी चेतना के फलस्वरूप १९३५ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना हुई जिसका मुख्य उद्देश्य राजवाड़ी में मतदान का अधिकार दिलाना था। यह अधिकार अब मिला तो सम्मेलन ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया। सामाजिक नेतृत्व में जिसमें सर्वश्री ईश्वरीदास जालान, रायबहादुर चोखानी, भंवरमल सिंघी, रामेश्वरलाल टांटिया, सीताराम सेक्सरिया, राधाकृष्ण कानोड़िया, नन्दकिशोर जालान, मोतीलाल सुरेका, सीताराम शर्मा आदि ने बंगाल में नवजागरण से प्रेरित होकर मारवाड़ी समाज में सुधार आन्दोलन का बीड़ा उठाया। मूलचन्द अग्रवाल 'दैनिक विश्वमित्र', हरिशंकर सिंघानिया एवं रतन शाह ने दहेज प्रथा, विवाह समारोह में दिखावा, फिजुल खर्ची, आडम्बर बन्द करने कन्या शिक्षा को अनिवार्य बनाना, बाल विवाह बन्द करने विधवा विवाह शुरू करने आदि का आन्दोलन शुरू किया है। वर्तमान समय में आधुनिक समाजसेवी एवं नेता उच्च शिक्षा कोष के अध्यक्ष श्री प्रहलाद राय अग्रवाल (रूपा एण्ड कम्पनी) ने उच्च शिक्षा के लिये धन देकर निर्धन व मेधावी जरूरतमंद छात्र–छात्राओं का सहयोग कर रहे हैं।

भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ७ फरवरी १९८६ को कहा कि ***"राजस्थानी समाज के लोगों ने देश में स्कूल, कॉलेज, धर्मशाला, बनाकर देश की तरक्की करके आगे बढ़ाया है।"***

रजत जयन्ती समारोह में पं० बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ० विधान राय ने कहा कि ***"मेरा सम्बन्ध मारवाड़ी समाज से ६० वर्षों पुराना है। मैंने बहुत समीप से मारवाड़ी समाज का अध्ययन किया है। इस समाज ने देश के लिए बहुत साहस दिखाया एवं दूसरे के लिये समय पर पूरा जी जान लगाया है।"***

पं० बंग मारवाड़ी सम्मेलन में मारवाड़ी समाज के लोग एवं महिला सभी वर्गों की सहायता करते हैं। गरीब विद्यार्थियों को स्कूल फीस, पुस्तक, यूनिफार्म आदि देते हैं तथा विधवा विवाह, इत्यादि का काम करते हैं। मारवाड़ी समाज में महिलाओं की ४५० शाखा एवं युवकों के ५०० ब्रांच खोलकर देश के कोने में एम्बुलेंस, विकलांग कैम्प इत्यादि की सेवा करते हैं।

अभी समाज में नन्दकिशोर जालान, मोहनलाल तुलस्यान एवं सीताराम शर्मा जी, इन्द्रजी संचेती, नन्दलाल रूँगटा, विश्वम्भर दयानन्द सुरेका जैसे लोग देश के सुधार में तन–मन–धन से लगकर समाज को आगे बढ़ाया है।◆

प्रदर्शन : मानव मन की दुर्बलता

-ईश्वर चन्द जैन, टिटिलागढ़

अनेक लोगों के समूह का नाम है– समाज ! समाज में धनी, निर्धन, मध्यम श्रेणी के सभी प्रकार के लोग होते हैं। समाज सबके लिए सुरक्षा कवच या आधार बनता है। समाज का परम धर्म होता है कि वह सबके योग – क्षेम वहन का दायित्व निभाए। हर्ष, शोक के प्रसंग, जो जीवन के अनिवार्य अंग हैं, उनको बाँट छाँट कर सबके सुख दुख में सहभागी बने और सबको समानता का एहसास कराये।

पर न जाने क्यों, मानव मन की एक दुर्बलता होती है कि वह औरों से स्वयं को अधिक दिखाने का मोह त्याग नहीं पा रहा है, भीतर में कुलबुलाते अहं को दबा नहीं पा रहा है। फलत: वह धन वैभव तथा सत्ता की शक्ति का प्रदर्शन करते जा रहा है।

विवाह समारोह तो प्रदर्शन का सर्वाधिक उपयुक्त प्रसंग है ही, इसके अतिरिक्त जन्म दिन, पुत्र पौत्र के बर्थडे प्रसंग, शादी की रजत व स्वर्ण जयन्तियों के समारोह जैसे और भी अनेक प्रसंग आविष्कृत कर लिये गए हैं। और तो और मृत्युभोज आदि में भी वह अपनी ठाठ बाट व शक्ति का प्रदर्शन करने में नहीं चूकता। किन्तु मद में मदमस्त वह अहं का पुतला नहीं सोचता कि ये प्रदर्शन हिंसा को खुला आमंत्रण है। पर्यवेक्षकों के अन्तर्मन में पलते ज्वाला मुखी को फटने का सुलभ अवसर है।

अहंकार व प्रतिस्पर्धा भरी असत् प्रवृत्तियां व्यक्तिगत जीवन और समाजिक समरसीकरण में असमानता का विष घोलकर अनर्थ घटित करती है। अहं के नशे में मदहोश और प्रतिस्पर्धा के दूषित प्रवाह में बहने वाला स्नेह रस से नीरस व्यक्ति, परिवार व समाज से कट जाता है। स्वस्थ जीवन की साख खो बैठता है, पद, यश, सम्मान सबको शून्य पर ला छोड़ता है। लेकिन फिर भी वह अपने अहं को, बड़प्पन को छोड़ना नहीं चाहता। इतिहास से भी वह कुछ सीखना नहीं चाहता। किसी कविने ठीक ही कहा है कि.....

अहंकार मिटा देता है, धन, गौरव और वंश।
ना मानो तो देख लो, रावण, कौरव और कंस।।

लगता है मानव अस्मिता से जुड़े जीवन्त प्रश्नों को समाहित करने की मानवी चेतना कुंठित हो चुकी है, सौहार्द्र और साम्यभाव सो चुका है। शेष रह गया है दया, करूणा, सहानुभूति व सहयोग के नामपर अहंकार पोषण। प्रदर्शन का नंगा नाच और धन वैभव का भौंडा प्रदर्शन। सगे भाई का परिवार या पड़ोसी के यहाँ नन्हे नन्हें बच्चे भूख से तड़प रहे हों या कुपोषण के कारण काल के गाल में समा रहे हों तो भी नहीं जागते सहानुभूति के भाव, नहीं होता रुखे सूखे अन्नदान का भी रूख और न ही होता है मेधावी गरीब छात्र के शिक्षा दान में अवदान। इधर जन्म दिन यानी वर्थ डे मनाने या पुत्र पौत्र के जन्मोत्सव की खुशियों का इजहार करने के उत्सवों में हजारों लोगों को सैकड़ो भांति के व्यंजन खिलाए जाते हैं और पीड़ा उस समय और बढ़ जाती है जब बची हुई सब्जियां, चावल, पुलाव आदि सुबह नाली में बहा दिए जाते हैं। हंसी खुशी के माहौल में दिखाया जाता है चारित्रिक पतन कारक नृत्यांगनाओं का अश्लील व भौंडा नाच। क्या यही है समाज? क्या यही है मानवी संवेदनशील, दयालुता? शायद इसी क्रूर सोच ने जन्म दिया है कलियुग को? जिस कलियुग में पनप रहा है सत्यानाशी ईर्ष्या, घृणा, प्रतिस्पर्धा, लूट–खसोट, हत्या का जंगल और सूख रहा है शान्त, सुखी, आनन्दमय जीवन का नन्दनवन।

भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र संस्कार तथा आत्माओं का दूध मिश्री का मधुर मिलन माना जाता है। स्वस्थ्य समाज रचना का स्नेह सूत्र था विवाह। जिसमें न उन्मुक्त भोग को प्रश्रय था, न सर्वथा दमन जनित कुंठा को अवकाश ही था। विवाह था– समाज संतुलन का सेतु। और इस हंसी खुशी भरे पवित्र प्रसंग पर सब के सहभागी बनने की प्रथा रही है, सीमित पकवानों के सहभोज में समाज के सभी लोग सम्मिलित होते थे, न हीनता को स्थान था और न प्रदर्शन को अवकाश। थी एक समाजिक शालीन परम्परा, किन्तु आज.....?

आज जरूरत है जब समाज का बच्चा बच्चा हनुमान बन समाज की गरिमा महिमा मंडित संस्कृति को संजीवन दे तथा आडम्बर, प्रदर्शन, अन्याय आदि के खिलाफ क्रान्ति का बिगुल फूँके। इन दिनों विभिन्न धर्म गुरू तथा जैनाचार्य अपने प्रवचनों में समाज को सलक्ष्य जोर देकर सजग कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि उनके मार्ग दर्शन में प्रौढ़ वर्ग के साथ साथ युवा वर्ग भी आगे आए और स्वयं को स्वस्थ बनाकर समाज संरचना में सपूर्ण सहयोग करें।◆

भारत के कोने–कोने मे फैले हुए नौ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता। 33

सबदां रौ सेठी भामाशाह : स्व. कन्हैयालाल सेठीया

-डॉ. अर्जुनसिंह शेखावत

कुण कैवे कन्हैयो गयौ ?
सबदां रौ सेठी भामाशाह।
ग्यानदान सूं साहित रो खजानो लुटातो गयो।
जवेरी सांचो पारखी
हीरा पन्ना मोती माणक
राजस्थान रत्नाकर रौ
समढ़ मथ मथ रची
घणी ग्रंथ माळा – निग्रन्थ सूं
खोली गांठ ग्रंथा री
खोल्यौ 'मर्म' में भरम रो मरम।
उतारी झरणै ज्यूं आकाश गंगा
न्यान गंगा ज्यूं पाण दी धरा ने भागीरथ – सी।
प्रणाम सूं हुयौ जलम परवाण
उजाळी मानखां जूण नै।
सिधाया सरगा–
मायड़ ने हेलौ करता
सतवाणी री सीख दैवता
चाल्या गया–
धरमजला धर कूंचा
गळगचिया करता – रमता
कूंकू पगल्या मांडता
लोक लकोलिया खांचता
कको कोड सिखावता
गुटकी खारी देवता
घोट नीमड़ौ पावता
साहित ने निरोगो राखत सारूं।
सबदा रा सेठी छेवट
हिमाळौ मुडै बोलायो
साकड़ी जीवन गळिया में
खोल खिड़किया चौड़ा किया रास्ता
मिमझर री सौरभ सोरम देवे
मिनखीचारा रौ रिछपाल
पीथल पातल रौ जस गायो
धरती धोरा री में जिण पांणत करी
करसो बण करसण करी
खड़ी कलम कळ ज्यूं
साहित रे खेतर।
कुण जमीन रो धणी?
अंतर री घाटी में
गूंजेला अनहद नाद
थलवट री रजवट में
डीगो डाकी डकरेल डोकरियो टणकेल
लिखी पोथ्यां–
टाळवी–टणकी–टणाटण
काळजे री कोर
हिवड़े रो हार
ई कविसर उमराव
रा मानस पुतर
जय में डाल गया
आपरौ प्रकाश
(जयप्रकाश मोबी सपूत)

कुण कैवे
नैणां जोत गई ही?
जोत सूं जोत मिली
रूं – रूं में आख्यां खुली
जाणै सैकडू सूरज उग्या।
वो प्रज्ञा पुरुष अबै
ज्योति पुरुष बणग्या
साहित्यकारा रै मारग दरसण सारूं।

-२/घ/३६, कमला नेहरू नगर
पाली-राजस्थान-३०६४०१ (राज.)

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, January'2009
RNI Regd. No. 2868/68

समाज विकास के लिए विज्ञापन सहयोग

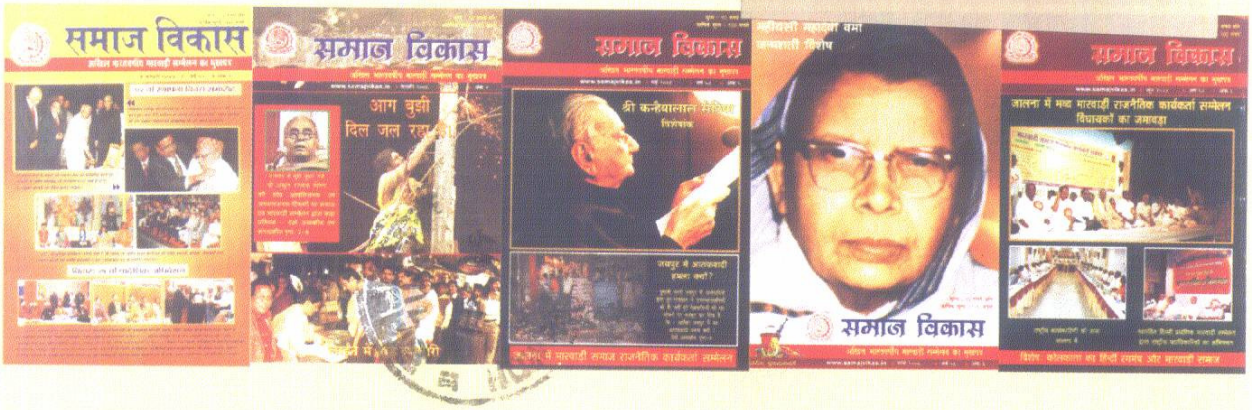

- प्रवासी मारवाड़ी समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मुखपत्र के रूप में 'समाज विकास' हिन्दी मासिक का पिछले ५९ वर्षों से प्रकाशन किया जा रहा है।
- 'समाज विकास' ने संपूर्ण भारत एवं विदेशों में बसे प्रवासी राजस्थानी भाइयों–बहनों को माटी की सौंधी सुगंध समेटे सांस्कृतिक सूत्र में बांधा है। देश के १४ राज्यों में सम्मेलन की प्रांतीय शाखाओं की प्रतिनिधियों के साथ पूरे मारवाड़ी समाज को भावनात्मक रूप से बांधे रखने में 'समाज विकास' पत्रिका अनूठा मंच सिद्ध हुई है।
- 'समाज विकास' आपके सहयोग एवं समर्थन पर निर्भर है, आशा है आप विज्ञापन सहयोग प्रदान कर अनुगृहित करेंगे।

विज्ञापन दर :
रंगीन वेक कवर पृष्ठ: १०,०००/– रंगीन कवर पृष्ठ ७,५००/–
साधारण श्वेत–श्याम पृष्ठ ५०००/– आधा पृष्ठ २५००/–

नन्द लाल रूँगटा
अध्यक्ष

राम अवतार पोद्दार
महामंत्री

आत्माराम सोंथलिया
कोषाध्यक्ष

नन्दकिशोर जालान
सम्पादक

शम्भु चौधरी
सह-सम्पादक

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

SRI KAILASHPATI TODI (2007)
118 MATARUMAL LOHIA LANE
SALKIA, HOWRAH - 711106

R.A. Poddar
2225 1862/3/4/5
9830019281
2 Brabourne Rd
6th floor

```
ERROR: stackunderflow
OFFENDING COMMAND: ~

STACK:
```